भूगोल हस्तामलक

OR

THE EARTH AS [A DROP OF] CLEAR WATER IN HAND

IN THREE VOLUMES

तीन जिल्दों में

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुत
नव्वाब लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार

राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द (३) ने बनाया

BY

RAJA SIAVAPRASAD, C.S.I.

॥ मस्त ॥

बैठकर सैर मुल्क की करनी यह तमाशा किताब में देखा

VOLUME I

पहली जिल्द

PART III.

तीसरा हिस्सा

इलाहाबाद गवर्नमेंट के छापेख़ाने में छापा गया
विद्यार्थियों के लाभ के लिये

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा
मार्च सन् १८९७ ई०

CONTENTS

OF THE

THIRD VOLUME.

तीसरे भाग का सूचीपत्र

नक़शों का सूचीपत्र

भूगोल हस्तामलक

तीसरा भाग

लंका अथवा सिंहलद्वीप

ईश्वर ने जिस तरह और सब चीजें इस भारतवर्ष के लिये अच्छी से अच्छी बनाई, एक टापू भी उसके वास्ते बहुत सुन्दर रचा है। नक़्शा देखने से मालूम होगा कि जैसे किसी धुगधुगी में आवेज़ा लटकता है उसी सूरत से यह सिंहल का टापू हिन्दुस्तान के दक्षिण तरफ़ पड़ा है। शास्त्र में इसका नाम लंका और सिंहल द्वीप लिखा है, मुसल्मान सरन्दीप और सीलान पुकारते हैं, और अंगरेज़ उसे सीलोन कहते हैं। इस टापू के लंका होने में कुछ सन्देह नहीं है, क्योंकि सेतबन्ध रामेश्वर के साम्हने है, और सेत उसी से जाकर मिलता है, और प्राचीन यूनानी ग्रंथों में इसका नाम टापरोबेन अर्थात् रावन का टापू लिखा है (१) फिर सिवाय इन बातों के दूसरा कोई टापू उधर ऐसा है नहीं जिसे लंका ख़याल करें, फ़रंगियों के जहाज़ों ने सारा समुद्र छान डाला, और जो कहो कि शास्त्र में लंका के दर्मियान सोने का कोट और बिभीषण का राज लिखा

---

(१) कोई कोई ऐसा भी कहते हैं कि टापरोबेन ताम्रपर्णी का अपभ्रंश है, बौद्ध लोगोंके पुराने ग्रंथों में इस टापूका नाम ताम्रपर्णीही लिखाहै।

है, तो हम यह पूछते हैं कि क्या उसी शास्त्र में काशी को भी सोने की नहीं लिखा, अथवा साक्षात महादेव को वहां का राजा नहीं कहा। निदान लंका २७० मील लम्बा और २४५ मील चौड़ा ७५० मील के घेरे में एक टापू है। कुछ ऊपर ८००० फुट तक ऊंचे उस में पहाड़ हैं। नदी सब से बड़ी महावलि गंगा है, प्राय २०० मील लम्बी, और उस में नाव बेड़े चलते हैं। लोहे और फिटकिरी की वहां खानें हैं, और माणक लसनिया नीलम कटैला गोमेदक बिल्लौर नदियों के बालू में मिलता है। नमक भी वहां बनता है, दारचीनी बहुत होती है, और निहायत उमदा, क़हवा इलायची और कालीमिर्च की भी इफ़रात है। जंगलों में वहां के हाथी इतने होते हैं, कि एक अंगरेज़ ने दो बरस के शिकार में चार सौ हाथी मारे, मज़बूती और चालाकी में वहां का हाथी सब जगह मशहूर है। हुमा पक्षी भी, जिसके परों की कलग़ियां बादशाह टोपियों में लगाते हैं, वहां बहुत होते हैं। समुद्र के कनारे ग़ोतेख़ोर सरकार की तरफ़ से मोती निकालते हैं, सन् १८३५ में ३८०००० रुपये इन मोतियों के नीलाम से सरकारी ख़ज़ाने में आये थे, उस में पहले ९ साल की आमदनी का पड़ता फैलाने से १४५०००० रुपया साल पड़ता है, शंख भी समुद्र से वहां बहुत निकलते हैं। आब हवा बहुत अच्छी, मौसिम मोतदल। आदमी वहां सिंहली मलबारी और मुसल्मान इन तीनों क़िस्म के बहुत हैं, सिंहली मालूम होते हैं कि वहां के असली रहनेवाले और हिन्दुस्तानियों से मिलकर पैदा हुए हैं। मत उनका बौध, सीधे सच्चे ग़रीब मिलनसार और ख़ूबसूरत, ब्रम्हा और हिन्दुस्तानवालों से मिलते हुए, बोली उनकी जुदी है, पर ग्रंथ उन के प्राकृत अथवा संस्कृत में लिखे हैं। मलबारियों का

मज़हब शैव और चालचलन उन के अपने देश के से, पर अक्सर अब अंगरेज़ी तरीक़ा इख़्तियार करते चले हैं, कुरसी मेज लगाकर खाते हैं, और अपनी स्त्रियों के साथ मजलिसों में नाचते हैं। इस्कूल सन् १८३३ में १७ तो सरकार की तरफ़ से और ९९४ पादरी इत्यादि लोगों की तरफ़ से गिने गये थे। एक क़ौम वहां विड्डस लोगों की है जो भील गोंद चुवाड़ों की तरह जंगल पहाड़ों में रहा करते हैं, और बन के फल फूल और कंदमूल अथवा शिकार से अपना गुज़ारा करते हैं, अंगरेज़ लोग उन्हें वहां के असली भूमिये ठहराते हैं। सिंहलियों की तवारीख़ बमूजिब जो बहुधा ठीक मालूम होती है यह टापू राजा विजय सूर्यबंशी ने सन् ईसवी से प्राय ५४३ बरस पहले वहां के असली भूमियों से छीना था, और श्री विक्रमराजसिंह उसके घराने में आख़िरी राजा हुआ, जो सन् १८१५ ईसवी में अंगरेज़ों के हाथ से निकाला गया। पहले वहां के राजा ने अरब और मलबारियों के हल्लों से बचने के लिये पुर्टगीज़ों की मदद चाही थी पर जब पुर्टगीज़ों ने उसी को ज़ेर करना चाहा, तो उसने डचलोगों को बुलाया, उन्हों ने भी धीरे धीरे उसका मुल्क दबाना शुरू किया, लेकिन जब फ़रंगिस्तान में डच लोगों ने अंगरेज़ों के साथ लड़ने पर कमर बांधी, तो सन् १७९६ में अंगरेज़ों ने उन्हें इस टापू से भी बेदख़ल करदिया, और जब वहां वालों ने अपने राजा के जुलम से तंग होकर बिशेष इस बात से कि उसने अपने मंत्री के लड़के उन्हीं की मा के हाथ से उखली में कुटवाए अंगरेज़ों की हिमायत में आना चाहा तो सरकार ने भी मज़लूम समझकर उनकी अभिलाषा पूरी की, और सन् १८१५ में राजा को निकालकर सारा टापू अपने क़बज़े में करलिया, तब से वह बराबर इंगलिस्तान के बादशाह के दख़ल में चला आता है आ-

मदनी वहां की सब मिलाकर तेंतीस लाख रुपया साल है। फ़ौज चार पलटन गोरे की और एक मलबारियों की रहती है। राजधानी कोलम्ब जहां गवर्नर रहता है। ६० अंश ५७ कला उत्तर अक्षांस और ८० अंश पूर्व देशांतर में उस टापू के पश्चिम बग़ल मंदराज से ३६८ मील दक्षिण है, क़िला ठीक समुद्र के तट पर अच्छा मज़बूत बना है, तोपें उसपर तीन सौ चढ़ी हुई हैं। आदमी उस शहर के अंदर सन् १८३२ में ३२००० गिने गये थे, सूरत शहर की अंगरेज़ी छावनियों से बहुत मिलती है। कोलम्ब से ६० मील ईशान कोन कांडी के दर्मियान, जहां उस टापूके पुराने राजा रहते थे, एक मंदिर के अंदर पिंजरे की तरह लोहे के कटहरे में सोने के छ ढकनों से ढका हुआ एक दांत रखा है, और उन छओं ढकनों के ऊपर एक सातवां ढकना पीतल का घंटे की सूरत ढका है, और फिर उसके ऊपर अनुमान डेढ़ लाख रुपये का जेवर और जवाहिरात रखा है। उस लोहे के कटहरे, में जिसके अंदर ये सब चीज़ हैं, ताला बंद रहता है, और कुंजी उसकी हाकिम के पास रहती है, क्योंकि सिंहलियों का यह निश्चय है कि वह दांत बुध का है, और जिसके पास रहे वही उस टापू का राजा होवे, सरकार ने इस दूरंदेशी से कि कोई बदमाश उसे लेकर बलवा न उठावे अपने क़बज़े में रखा है, जब साल में एक बार मेला होता है तो साहिब कलेक्टर ताला खोलकर लोगों को दर्शन करा देते हैं। कोलम्ब से ४५ मील पूर्व अग्निकोन को झुकता हमालल पहाड़ के ऊपर, जिसे अंगरेज़ आदम का शिखर कहते हैं, और समुद्र से ७००० फ़ुट ऊंचा है, एक पत्थर की चटान पर आदमी के पैर का निशान बना है, पर दो फ़ुट लम्बा। सिंहली लोग कहते हैं कि वह बुध के पैर का निशान है, और

बुध उसी जगह से स्वर्ग को चढ़ा था, और मुसल्मान उसको आदम के पैर का बतलाते हैं, और कहते हैं, कि वह उसी जगह स्वर्ग से गिरा था॥

बर्म्हा

यह मुल्क जो एशिया के अग्निकोन की तरफ़ हिंदुस्तान के पूर्व है ९ अंश से २६ अंश उत्तर अक्षांस तक और ९२ अंश से १०४ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। असल नाम उस मुल्क का वहां के आदमी म्रन्मा पुकारते हैं, और ब्रह्मा बर्म्हा और बर्मा इत्यादि सब उसी म्रन्मा का अपभ्रंश है। पश्चिम तरफ़ उसके हिंदुस्तान और बंगाले की खाड़ी, और पूर्व तरफ़ उसकी सरहद कम्बोज देश जिसे अंगरेज़ कम्बोडिया कहते हैं और चीन के मुल्क से लगी है, उत्तर को उसके चीन है, और दक्षिण स्याम और समुद्र और मलाका है। लंबान उसकी प्राय एक हजार मील और चौड़ान प्राय छ सौ मील और बिस्तार अनुमान १९४००० मील मुरब्बा गिनाजाता है। आदमी उसमें ७४ फ़ी मील मुरब्बा अर्थात् १४०००००० बस्ते हैं। दक्षिण तरफ़ अर्थात् समुद्र के निकट तो इस इस मुल्क में मैदान है, और उत्तर भाग में बिलकुल जंगल और कोहिस्तान। नदियों में ऐरावती सब से अधिक मशहूर है, वह तिब्बत के पूर्व से निकलकर १८०० मील बहने के बाद कई धारा होकर समुद्र से मिलता है, उसमें नाव बहुत दूर तक चलती है। और उसके पानी से कनारे की खेतियों को भी बड़ा फ़ाइदा है, अमरपुर के नज़दीक १४ मील लंबी एक झील बहुत गहरी है, और उसके चारों तरफ़ पहाड़ों के होने से बहुत रम्य और सुहावनी मालूम होती है। ग़ल्लों में वहां चावल बहुत इफ़रात से पैदा होता है, और उसी का बड़ा खर्च है। चाय इस मुल्क में

खराब होती है। केवल तर्कारी और अचार बनाने के काम में वहां के आदमी लाते हैं। सागौन की जंगलों में इफ़रात है। टांगन वहां से बिहतर कहीं नहीं होता, गाय भैंस का दूध वहां कोई नहीं पीता, शेर और हाथियों का जंगल पैगू के नज़दीक है, लेकिन गीदड़ उस बिलायत भर में नहीं। खान से उस मुल्क में सोना चांदी माणक नीलम लोहा रांगा सीसा सुरमा गंधक हरिताल संखिया कहरुवा कोयला और कई क़िस्म के क़ीमती पत्थर बहुतायत से निकलते हैं। अमरपुर के नज़दीक संगमर्मर की बहुत उमद: खान है, लेकिन उस पत्थर से सिवाय देवताओं की मूर्ति के और कुछ नहीं बनने पाता, सब से ज़ियाद: रुपया इन खान की चीज़ों में राजा को नफ़्त अर्थात् मटियातेल से वसूल होता है, लोग उसको जमीन से तीस तीस पुर से गहरे कूए खोद कर निकालते हैं, वह वहां चराग जलाने के काम में आताहै। मौसिम वहां भी हिंदुस्तान के से हैं, लेकिन एतिदाल के साथ, अर्थात् न तो वहां कभी ज़ियाद: जाड़ा पड़ता है, और न कभी सख्त गर्मी होती है। राजधानी वहां की अइनूवा जिसे अंगरेज़ आवा और वहांवाले रत्नपुर भी कहते हैं २१ अंश ४५ कला उत्तर अक्षांस और ९६ अंश पूर्व देशांतर में ऐरावती के बांएं कनारे बसा है, उसकी शहरपनाह दस गज़ ऊंची, और बहुत गहरी और चौड़ी खाई से घिरी हुई है। क़िला चौखूंटा २४०० गज़ लम्बा और चौबीस ही सै गज़ चौड़ा है। मकान बिलकुल काठ के हैं, ईंट का घर सिवाय राजा के और कोई नहीं बनाने पाता। शहर में एक मन्दिर बौध मतका बहुत खूब सूरत और आलीशान है, और उस मन्दिर के अन्दर एक मूर्ति गौतम की आठ गज़ ऊंची एक संगमर्मर की बैठी हुई बनी है। आदमी उसमें माय ३०००० बसते हैं। लोग वहां के

खुशदिल तेज मिज़ाज और बेसबरे होते हैं, हिंदुस्तानियों की तरह सुस्त और आलसी नहीं होते। औरतें वहां की शर्म और परदा नहीं करतीं, और घर का सारा काम और मिहनत उन्हीं के ज़िम्मे है, मर्द मज़े से बैठे पान चबाया और हुक्का पिया करते हैं, हक़ीक़त में उन औरतों की ज़िन्दगी लौंडी और बांदियों से भी बत्तर है, मिहनत मज़दूरी के सिवाय वहां के आदमी अपनी बहू बेटियों से कस्ब भी करवाते हैं, और इस बात से शर्म नहीं खाते, बरन जो औरत जितना जियाद: रुपया कमालाती है उतनाही अपने घरवालों में नाम पाती है। सूरत शकल में वहां के आदमी चीनियों से मिलते हैं, औरतें गोरी होती हैं, लेकिन भद्दी, मर्द नाटे गठीले, हजामत नहीं बनाते दाढ़ी मूछों के बाल मुचने से उखाड़ डालते हैं, सुरमा और मिस्सी मर्द औरत दोनों लगाते हैं। शादी कम उमर में नहीं करते, और एक औरत से अधिक नहीं व्याहते। जाति भेद उन लोगों में नहीं है, और मत बुध का मानते हैं, जीव की हिंसा करनी उस मज़हब के विरुद्ध है, परन्तु वे लोग बेखटके मास मछली खाते हैं, और शराब भी पीते हैं। पुनर्जन्म का निश्चय रखते हैं, और अपने मुर्दों को आग में जलाते हैं। ज़ुबान उन लोगों की मुश्किल है, और किसी दूसरी से नहीं मिलती। हर्फ़ भी उन के गोल गोल ख़ास एक तरह के हैं, और हिन्दी की तरह बांएं से दहनी तरफ़ लिखे जाते हैं। पोथियां उनकी तालपत्र पर लिखी रहती हैं, और कभी कभी सोने के पत्रों पर लिखते हैं। कविताई और शास्त्र उस भाषा में भी बहुत हैं, और कई उनकी मजहबी पोथियां प्राकृत बोली में लिखी हैं। मुलम्मे का काम वे लोग खूब करते हैं, और धात और मिट्टी के बर्तन और रेशम के कपड़े और संगमर्मर की मूर्तें और ज-

हाज़ भी अच्छा बनाते हैं। रुपये पैसे की जगह वहां चांदी और सीसे का कुर्स चलता है। बाहर की आमदनी में अंगरेज़ी बनात और कपड़े और हथियार और धातु के बरतन और रेशमी रूमाल बहुत खर्च होते हैं, और निकासी के माल में सागौन इत्यादि क़ीमती लकड़ियों की वहां बड़ी पैदा है, सिवाय इसके वे लोग रुई कहरुबा हाथीदांत जवाहिर पान और एक क़िस्म की चिड़यों के घोसले जो उस देश के आदमी बहुत मज़े के साथ खाते हैं, चीनियों को देते हैं, और उसके बदले रेशम धात के बरतन मख़मल मुरब्बे और सोने के तबक़ उन से लेते हैं। तहसील में वहां का राजा जो कुछ कि मुल्क में पैदा होता है और जो कुछ कि बाहर से आता है सब का दसवां हिस्सा लेता है, और वहां का यह आईन है कि जब कोई लड़ाई या हंगामा आ पड़े तो मुल्क के सारे मर्द राजा की चाकरी में हाज़िर होवें, और इसी बाइस से वहांका राजा बड़ाभारी लश्कर मैदान में ला सकता है, लेकिन ऐसी गवर्दल की भरती को हम फ़ौज नहीं कह सकते। नाव भी लड़ाई की वहां के राजा ने बहुतसी तयार कर रखी हैं, उन पर अकसर सुनहरा काम किया हुआ है। और पानी में बहुतही जल्द चलती हैं। यद्यपि धर्मशास्त्र तो वहां भी मनु का जारी है, परन्तु मुआमले मुक़द्दमों में बड़ी बेइंसाफ़ी होतीहै, ऐसा कोई मुजरिम नहीं जो मक़दूर मुवाफ़िक़ नज़राना अदाकरने से रिहाई न पा सके। यह भी इस मुल्क का आईन है कि राजसंबंधी जो बात कही जावे उस के साथ सोने का शब्द ज़रूर कहना चाहिये, जैसे हमको कहनाहै कि राजा के कान तक यह बात पहुँची अथवा राजा की नाक में इतर की खुशबू गई तो अवश्य कहना पड़ेगा कि सोने के कानतक यह बात पहुँची और सोने की नाक में

इतर की खुशबू गई । वहां के राजा का निशान हंस है । सब से जियादा तअज्जुब की बात इस राज में यह है, कि राजा की सवारी का जो सफ़ेद हाथी है, उसका भी दरजा राजा के बराबर समझा जाताहै, उस हाथी का दरबार जुदाही लगता है, और उसके वज़ीर दीवान मुन्शी मुतसद्दी नक़ीब चोबदार अलग नौकर हैं, जो एलची वकील कारदार इत्यादि राजा के दरबार में जाते हैं, उनको इस हाथी के साम्हने भी मुजरा बजा लाकर नज़र दिखलानी पड़ती है, उसके रहने का मकान राजा के महल से कुछ कम नहीं, ज़र दोज़ी मख़मल की गद्दी उसके सोने के वास्ते बिछाई जाती है, और रत्न जटित सोने के बरतनों में उसका खाना पीना होता है, इतरदान पानदान और पीकदान भी उसके साम्हने रहता है । वहां का राजा आदमी के कंधे पर उसके मुँह में रूमाल की लगाम देकर घोड़े की तरह सवार होता है !! कहते हैं कि उस देश के पहले राजा मगध अर्थात् बिहार से वहां गये थे, और इस बात को वे लोग कुछ कम अढ़ाई हज़ार बरस बीते बतलाते हैं । सन् १८२४ में सरहद पर उन लोगों के जियादतियों के सबब क़रीब ५००० सिपाहियों के सरकारी फ़ौज का चढ़ाव हुआ था, और दो बरसतक बराबर लड़ाई होती रही, यद्यपि नया और अजनबी मुल्क होने के सबब सरकारी फ़ौज को सख़्तियां बहुत झेलनी पड़ीं लेकिन आख़िर जब दुश्मन के आदमियों को शिकस्त देती हुई और फ़तह के निशान उड़ाती हुई आवा से कुल दो मंज़िल के तफ़ावत पर यंडाबू में जा दाख़िल हुई, तो नाचार राजा ने पैग़ाम सुलह का भेजा, सरकार ने भी उससे जुर्माने के तौर पर एक करोड़ रुपया लड़ाईका ख़र्च और टेनासेरिम अर्थात् मौलमीन का इलाका हमेशः के वास्ते इस क़ौल के साथ फिर कभी ब्रह्मा का

राजा सरहद पर कुछ ज़ियादती न करे और सरकारी रअय्यत से जो उसके मुल्क में व्यौपार के वास्ते जावे सिवाय मामूली महसूल के और कुछ ज़ियादा तलबी न करे लेकर अपनी फ़ौज उसके मुल्क से हटाली। सन् १८५१ में वहां के राजा के सिर में फिर खुजली आई, अर्थात् जब अहदनामे के बरखिलाफ़ उसके नाज़िम ने रंगून में सरकारी रअय्यत के जहाज़वालों को तंग करके उन से ज़बरदस्ती रुपये लिये, और गवर्नर जेनरल बहादुर ने उन जहाजवालों का रुपया लौटवाने के लिये और उस नाज़िम को सज़ा देने के लिये राजा को खत लिखा, तो उसने दोनों से एक काम भी न किया। नाचार सरकार ने फ़ौज भेजी, और वह मुल्क भी समुद्र के तटस्थ जो आराकान और मौलमीन के बीच उसके क़बजे में था अपने दखल में कर लिया, न उसके पास समुद्र के तटस्थ कोई जगह रहेगी, न वह फिर सरकारी जहाजवालों पर ज़ियादती कर सकेगा। निदान बर्म्हा में आराकान तो सरकार के पास पहले ही से था, और मौल मीन सन् १८२४ की लड़ाई में लिया था, अब इस नये मुल्क अर्थात् रंगून पैगू इत्यादि के हाथ आने से बर्म्हा के राज्यका पूर्व भाग चटगांव से लेकर मलाका की हद तक बंगाले की खाड़ी के तटस्थ बिलकुल सरकार अंगरेज बहादुर का होगया। यह सरकारी बर्म्हा तीन कमिश्नरियों में बटा है, उत्तर आराकान की कमिश्नरी, दक्षिण मौलमीन की, और बीच में पैगू का और इन कमिश्नरियों के नीचे मजिस्ट्रेट कलैक्टरों की तरह डिपुटी कमिश्नर और आसिस्टेंट मुक़र्रर हैं। आराकान का कमिश्नर आवा से दो सौ मील नैर्ऋतकोन आकयाव में रहता है, मौलमीन का कमिश्नर आवा से चार सौ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता मौलमीन में रहता है, और पैगू का कमिश्नर

आवा से तीन सौ मील दक्षिण पैगू में रहता है। पैगू से साठ मील दक्षिण ऐरावती के दहने कनारे रंगून में एक मंदिर सोमदेव का अष्ट-कोण ३६१ फुट ऊंचा बना है, और उसके शिखर पर लोहेका छत्र सुनहरी मुलम्मा किया हुआ पचास फुट घेरे का चढ़ा है, यह मंदिर बौधमती देहगोप की तरह अन्दर से ठोस है, और दर्वाजा उस में कहीं नहीं॥

स्याम

यह मुल्क जिसको बर्म्हा के आदमी स्यान और शान पुकारते हैं १० अंश से १९ अंश उत्तर अक्षांस और ९९ से १०५ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। हदें उसकी उत्तर और पश्चिम तरफ़ बर्म्हा, दक्षिण तरफ़ स्यामकी खाड़ी और पूर्वतरफ़ कम्बोज से मिली है। प्राय ६५० मील लंबा और प्राय ३६० मील चौड़ा। बिस्तार १५५००० मील मुरब्बा। आबादी फ़ी मील मुरब्बा १९ आदमी के हिसाब से २९४५००० आदमी की। यह मुल्क दो पहाड़ों के दर्मियान एक बड़ा मैदान है, और उसके बीच में मीनम नदी बहती है। बरसात में अकसर जगह दलदल होजाने के बाइस आबहवा वहां की खराब रहती है, परन्तु जमीन उपजाऊ जो जो चीजें बंगाले में पैदा होती हैं वे सब यहां भी हो सकती हैं, बरन चावल तो इस इफ़रातसे शायद सारी दुनियां में कहीं पैदा न होता होवेगा, सिवाय इस के इलायची दारचीनी तेजपात कालीमिर्च और अगर भी बहुत होता है। मेवों में मंगोस्तीन आम से भी अधिक सुस्वाद है, इस से बढ़कर दुनियां में कोई मेवा अच्छा नहीं होता। गीदड़ और खरगोश का उस मुल्क में अभाव है। खान से वहां हीरा नीलम माणक यशम लोहा रांगा सीसा तांबा और सुरमा निकलता है, और नदियों का

रेत धोने से सोना भी मिलता है, चुम्बुकका वहां एक पहाड़ है। राजधानी इस मुल्क की बंकाक है, वह शहर १३ अंश ४० कला उत्तर अक्षांस और १०१ अंश १० कला पूर्व देशांतर में मीनम नदी के दोनों कनारोंपर बसा है। बाज़ार वहां का बिलकुल पानी के ऊपर है, बांस के बेड़े बनाकर उन्हीं पर दूकानदार रहते हैं, और अपना माल बेचते हैं, बरन मकान भी जो लोग नदी के तीर बनाते हैं तो ज़मीन से बांस और शहतीरें गाड़कर इतना ऊंचा रखते हैं कि बरसात में दर्या चढ़ने से डूब न जावे, मकान सब काठ के होते हैं, और उन में जाने के वास्ते सीढ़ी ज़रूर चाहिये। उस शहर में सड़क बिलकुल नहीं है, लोग घोड़े गाड़ियों की बदल एक एक छोटी सी नाव अपने घरों में बंधी रखते हैं, उसी से सब काम निकल जाते हैं। बस्ती इस शहर की प्राय ४०००० आदमी के है। नामी मन्दिर इस शहर का दो सौ फुट ऊंचा होवेगा। चाल चलन और मज़हब इस मुल्कवालों का बम्र्हा के आदमियों से बिलकुल मिलता है। नाखून ये लोग बढ़ने देते हैं तराशते नहीं, और बैद उनके यदि बीमार को आराम न हो तो उस से कुछ भी नहीं लेते। जुबान इनकी जुदी है, और गाने बजाने का बड़ा शौक़ रखते हैं। ये लोग तिजारत के वास्ते अपने देश से बाहर नहीं जाते, ग़ैर मुल्क के आदमी बाहर से भी माल लाते हैं और वहां का भी माल बाहर लेजाते हैं। राजा खुद तिजारत करता है, बिना उसकी आज्ञा के रांगा हाथी दांत सीसा इत्यादि का कोई भी सौदा नहीं करसकता। वहां के आदमी सोने के तबक़ खूब बनाते हैं, और बुरी भली बारूत भी अपने काम लाइक़ तयार कर लेते हैं, यहां का राजा लड़ाई के वास्ते अपनी रअय्यत को उसी तरह जमा करसकता है कि जैसे बम्र्हा में दस्तूर है॥

जिसे वहां के आदमी मलयदेश कहते हैं १ अंश २२ कला उत्तर अक्षांस से लेकर ९ अंश तक चला गया है। वह तीन तरफ़ समुद्र से घिरा है, और चौथी तरफ़ अर्थात् उत्तर को उसका नाम डमरूमध्य बर्म्हा के मुल्क से मिलाता है। लम्बान उसकी प्राय ८०० मील और चौड़ान प्राय १२० मील होवेगी। इस मुल्क में छोटे छोटे कई राज हैं। लौंग जायफल कालीमिर्च चन्दन सुपारी और चावल वहां इफ़रात से होता है, मंगोस्तीन मेवों का राजा है। भेड़ी बैल और घोड़े कम होते हैं, पर भैंस बहुत। रांगा खान से निकलता है, और नदियों का बालू धोने से सोना भी मिलता है। आब हवा मोतदिल, और ख़ास मलाका के ज़िले की तो बहुत ही अच्छी और निरोगी है, अकसर साहिब लोग बीमारी में वहां हवा खाने के वास्ते जाते हैं, पर धरती उपजाऊ नहीं है। आदमी वहां के मलाई कहलाते हैं, और लूट मार में बड़े चालाक और दिलेर हैं, समुद्र में जाकर जहाज़ों को लूट लेते हैं, सिवाय इसके कीना भी दिल में बड़ा रखते हैं, और जब कभी घात पाते हैं दुश्मन से बिना बदला लिये नहीं छोड़ते, परदेसियों के साथ अकसर दग़ाबाज़ी कर जाते हैं, पर सभी एक से नहीं हैं, कितने ही उनमें सच्चे और मिलनसार भी होते हैं। पहाड़ों के दर्मियान एक क़ौम जंगली इस तरह की बस्ती है, कि उसकी सूरत हब्शियों से मिलती है, रंग काला होठ मोटे नाक चिपटी बाल घूंघरवाले मगर क़दमें बहुती नाटे डेढ़ गज़ से अधिक ऊंचे नहीं होते नंगधिड़ंग जंगलों में फिरा करते हैं, और फल फूल कन्द मूल अथवा शिकार से अपना पेट भरते हैं। इस मुल्क के आदमी जूआ बहुत खेलते हैं, विशेष करके मुर्ग़ की लड़ाई में, यहां तक कि अपने जोरू लड़के और बदन के कपड़े तक हार देते हैं। अफ़यून बहुत

खाते हैं, और बाज़े वक़्त उसके नशे में दीवाने बनकर बड़ी ख़राबियां करते हैं। हाकिम वहां का सुलतान कहलाता है, क़ौम का सुन्नी मुसलमान है। सन् १२७६ तक वहां के राजा हिन्दू थे। ज़ुबान में उनकी बहुत से शब्द अरबी और संस्कृत के मिले हुए हैं, और हर्फ़ उनके अरबी से मुवाफ़िक़ हैं। जहाज़ और किश्तियां वे लोग बहुत अच्छी बनाते हैं। लौंग जायफल काली मिर्च मोम बेंत साग़ू रांगा हाथी दांत वहां से दिसावरों को जाता है, और अफ़यून रेशम इत्यादि वहां बाहर से आता है। राजधानी वहां की मलाका २ अंश १४ कला उत्तर अक्षांस और १०२ अंश १२ कला पूर्व देशांतर में समुद्र के तट पर बसा है, यह शहर ख़ास मलाका के ज़िले के साथ सरकार के क़बज़े में है। बिस्तार उस ज़िलेका प्राय ८०० मील मुरब्बा होवेगा सन् १५१० में उसे पुर्टगालवालों ने मुसलमानों से लिया था, सन् १६४० में उसे डच लोगोंने फ़तह किया, अब सन् १७९५ से अंगरेज़ों के क़बज़े में है। मलाका के अग्निकोन १२० मील के तफ़ावत से सिंहपुर और वायुकोन २४० मील के तफ़ावत से पूलोपिनांग ये दोनों टापू भी सरकार के दख़ल में और मलाका की गवर्नरी के ताबे हैं। सिंहपुर २६ मील और पिनांग १५ मील लंबा है। सिंहपुर की आब हवा बहुत अच्छी है। अंगरेज़ पिनांग को वेलस के शाहज़ादे के नाम से पुकारते हैं, और हिन्दुस्तानी इन टापुओं को कालापानी कहते हैं, भारी गुनहगार बंधुए क़ैद रहने के वास्ते इन टापुओं में भेजे जाते हैं। आब हवा अच्छी होने के कारण कितनेही साहिब लोग वहां जा रहे हैं, और बहुतेरी कोठियां और बाग़ और बँगले बन गये हैं॥

वहां के बादशाह के क़बजे तीन मुल्क हैं कोचीन, टांकिंग अथवा ऐनम, और कम्बोज जिसे अंगरेज़ कम्बोडिया कहते हैं। कम्बोज ८ अंश से १५ अंश उत्तर अक्षांस तक, औ कोचीन ८ अंश से १८ उत्तर अक्षांस तक, और टांकिंग १८ अंश से २३ अंश उत्तर अक्षांस तक, १०५ और १०९ अंश पूर्व देशांतर के बीच चला गया है। उत्तर तरफ़ उसके चीन है, दक्षिण और पूर्व समुद्र और, पश्चिम को उसकी सरहद स्याम ब्रह्मा और चीन से मिली है। बिस्तार इन मुल्कों का प्राय डेढ़ लाख मील मुरब्बा है, और आबादी फ़ी मील मुरब्बा ९३ आदमी के हिसाब से १३९५०००० आदमी की। इस विलायत में मैदान और पहाड़ दोनों हैं। नदी सब में बड़ी कम्बोज की है, चीन के मुल्क से निकलकर सात सौ कोस बहने के बाद समुद्र में गिरती है। पैदाइश वहां भी उन्हीं मुल्कों की सी होती है कि जिनका बयान ऊपर लिखागया। बैल वहां बहुत कम, हल भैंसों से चलाते हैं, भेड़ा और गधा बिलकुल नहीं होता, हाथी बहुत बड़े होते हैं। खान से लोहा चांदी और सोना निकलता है। धरती उपजाऊ है, साल में दो फ़सलें धान की पैदा होती हैं। हू वहां के बादशाह की दारुस्सलतनत एक नदीके किनारेपर बसाहै, और क़िले के अंदर बहुत ख़ासा बादशाही महल और एक मंदिर बना है। कहते हैं कि वह क़िला बहुत मज़बूत है, और दो हज़ार तोपें उस पर चढ़ी हुई हैं। आदमी वहां के नाटे और गठीले और चालाक और मज़बूत होते हैं, पायजामा पगड़ी और आधी जांघ तक के लंबी आसतीनवाले कुरते पहिनते हैं, बाल लंबे और जूड़ेके तौर पर बँधे रहते हैं, औरतें सिरपर टोपी रखती हैं, जूता कोई नहीं पहिनता, मिहनतका काम अकसर औरतों के हिस्से में आता है, यहां तक कि बेचारियां हल जोतती हैं और नाव

खेती हैं, मिस्सी से दांत काले और पान से होंठ लाल मर्द और औरत दोनों रखते हैं, हाथी का गोश्त ये लोग बहुत मज़े से खाते हैं। जुबान वहां की चीन से मिलती है, और मज़हब बुध का मानते हैं। जब किसी का कोई मरता है तो उसे दो बरस तक संदूक़ में बंदकरके घर में रख छोड़ते हैं, और नित्य उसके साम्हने गाना बजाना हुआ करता है भोग भी चढ़ाते हैं, और लोग भी उसके दर्शनों को आते हैं, फिर दो बरस बाद उसको बड़ी धूमधाम से ज़मीन में गाड़ते हैं। कारीगर वहां के चीनियों की तरह बहुत चालाक और होशियार हैं, विशेषकरके रेशम तयार करने में। आमदनी वहां बनात और छींट शोरा गंधक सीसा चाय रेशम अफ़यून और गर्म मसालों की है, और निकास वहां से रेशम घासके कपड़े सीप की चीज़ें चटाई हाथी दांत कचकड़ा आबनूस दारचीना इत्यादि का होता है। फ़ौज वहांके बादशाह की माय पचास हज़ार होवेगी, सिवाय इसके जब काम पड़े तो वह अपने मुल्क के सारे आदमी अठारह बरस से साठ बरस तक की उमरके बेगार में चाहे जिस ख़िदमत पर भेजसकता है, और आदमी वहां के बादशाह की आज्ञा बिना अपने मुल्क से कहीं बाहर नहीं जा सकते। किसी ज़माने में यह मुल्क चीन के बादशाह के ताबे था॥

चीन

साबिक़ में इस मुल्क के दर्मियान ज़िले ज़िले के जुदाजुदा राजा थे, और हमेश: आपस में लड़ा भिड़ा करते पहला बादशाह जिस ने उन सब छोटे छोटे राजाओं को अपने बस में करलिया चीन हुअङ्ती था कि जिसको माय दो हज़ार बरस गुज़रते हैं, इस बादशाह के संतान चीनबंशी कहलाये, और उसी बंश से वह मुल्क चीन कहलाया।
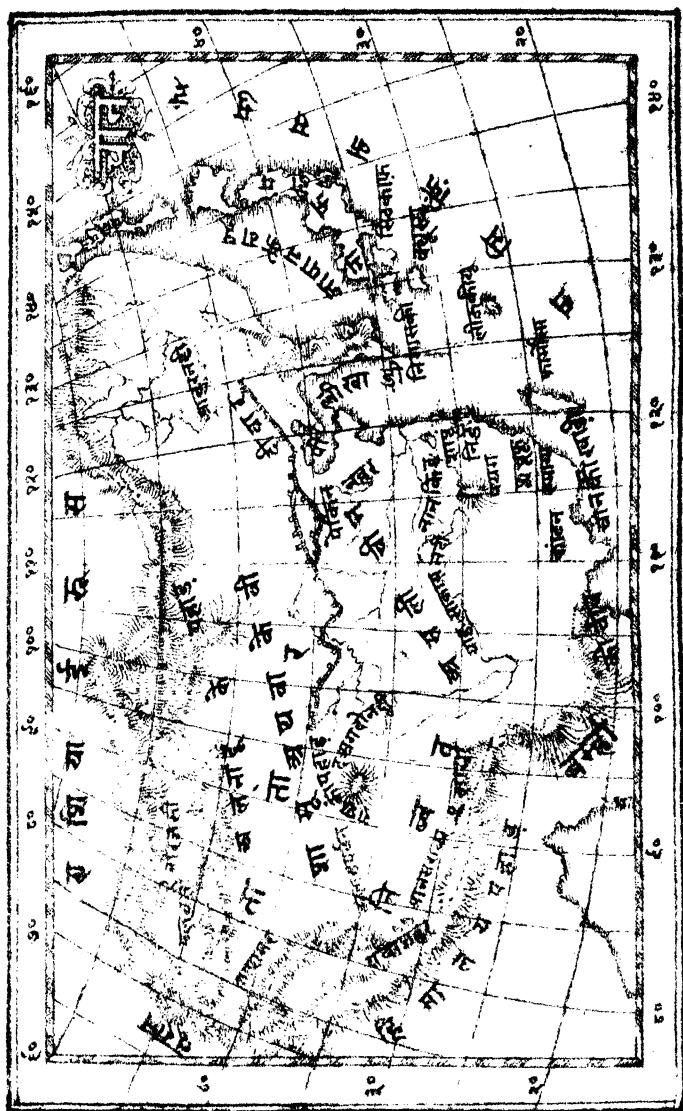
वहांवालों के उच्चारण में यह शब्द त्सिन है कि जिसको अरबवाले सीन बोलते हैं, और अंगरेज़ी में चायना कहते हैं। यह मुल्क २१ अंश से ५५ अंश उत्तर अक्षांस तक और ७० अंश से १४२ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। उसके पश्चिम तरफ़ तूरान, पूर्व तरफ़ पासिफ़िक समुद्र, उत्तर तरफ़ एशियाई रूस, और दक्षिण तरफ़ हिमालय का पहाड़ बम्ह्ग और कोचीन का मुल्क है। लंबान उसकी पूर्व से पश्चिम को प्राय ४७०० मील और चौड़ान उत्तर से दक्षिण को प्राय २००० मील है, और बिस्तार कुछ न्यूनाधिक ५०००००० मील मुरब्बा होवेगा। यद्यपि वस्तुत: इस विस्तार के दर्मियान चार मुल्क बसते हैं, अर्थात् असली चीन तिब्बत तातार जिसे महाचीन भी कहते हैं और कोरिया का प्रायद्वीप, लेकिन एक बादशाह के आधीन रहने के कारण अब यह सब एक ही नाम से अर्थात् चीन का मुल्क पुकारा जाता है। असली चीन उत्तर तरफ़ तातार से मिला है, और उस के पूर्व और दक्षिण पासिफ़िक समुद्र की खाड़ियां हैं, नाम उन का पीली नीली और चीन की खाड़ी है, और दक्षिण कोचीन और बम्ह्ग से, और पश्चिम बम्ह्ग और तिब्बत से घिरा है, और २१ से ४१ अंश उत्तर अक्षांस तक और ९७ अंश ४२ कला से १२२ अंश ५३ कला पूर्व देशान्तर तक चला गया है। उस में १८ सूबे हैं, बहुतेरे उनमें सूबे बंगाला से भी बड़े और अधिक आबाद हैं। तिब्बत हिमालय के उत्तर है, उसी पहाड़ की तराई से ८१ अंश से लेकर १०० अंश पूर्व देशांतर तक और २८ अंश से ३५ अंश उत्तर अक्षांस तक चला गया है, वह लंबा पूर्व से पश्चिम प्राय १३००० मील और चौड़ा उत्तर से दक्षिण ४५० मील है। तातार जो ३५ अंश से ५५ अंश उत्तर अक्षांस तक और ७२ अंश से १४२ अंश पूर्व देशान्तर तक चला

गया है प्राय २५०० मील लम्बा और १००० मील चौड़ा होवेगा, उत्तर तरफ़ अलताई का पहाड़ उसको रूस से जुदा करता है, दक्षिण तरफ़ तिब्बत है, पश्चिम में तूरान पड़ा है, और पूर्व को असली चीन और समुद्र से घिरा है। कोरिया का प्रायद्वीप जो असली चीन के ईशानकोन की तरफ़ ३४ और ४३ उत्तर अक्षांस और १२४ और १३० पूर्व देशान्तर के बीच में पड़ा है प्राय ७००० मील लम्बा और २०० मील चौड़ा होवेगा, और तीन तरफ़ समुद्र से और चौथे अर्थात् उत्तर की तरफ़ तातार से घिरा है। सिवाय इन मुल्कों के बहुत से टापू भी पासही पासिफ़िक समुद्र में फ़ार्मोसा और लीऊ कीयू इत्यादि वहां के बादशाह के दख़ल में हैं, यहां तक कि उसकी रऐयत उसको खुशामद की राह से दस हज़ार टापुओं का मालिक पुकारती है। यह मुल्क दुनियां के सारे मुल्कों से अधिक आबाद है, तीस करोड़ आदमी उसमें बस्ते हैं कि जो दुनियां की बस्ती का प्राय तीसरा हिस्सा होता है, और फ़ी मील मुरब्बा ६० आदमी पड़ते हैं, लेकिन इन तीस करोड़ से तिब्बत तातार और कोरिया में पूरे करोड़ भी नहीं बस्ते और असली चीन की आबादी फ़ी मील मुरब्बा २७७ आदमी का अनुमान करते हैं। यह राज इतना पुराना है कि उसकी इब्तिदा से कोई भी पक्की ख़बर नहीं देता, अंगरेज़ लोग ख़याल करते हैं कि तूफ़ान से थोड़े ही दिनों बाद यह सल्तनत खड़ी हुई, हिन्दू के शास्त्रों में भी इस मुल्क का चरचा बहुत जगह लिखा है, और दूसरी क़ौमों की पुरानी किताबों में भी जहां कहीं उसका बयान है बड़ाई और मान ही के साथ किया है। इस देश के आदमी खेती करना रेशम बुना प्राचीन समय से जानते हैं, चुम्बक का गुण उन्हीं लोगों ने प्रकट किया। विद्या अभ्यास में वे लोग बहुत दिल देते हैं, गांव गांव में

बादशाह की तरफ़ से इस्कूल मुक़र्रर हैं, उन में लिखना पढ़ना हिसाब और नीति शास्त्र सिखलाया जाता है, और लड़कों को आठ बरस की उमर होतेहीं उनके मा बाप वहां भेज देते हैं, उस मुल्क में ग़रीब और अमीर लिखना पढ़ना सब जानते हैं। इक्सीर और कीमियागरी इस वाहियात की बुनियाद भी उसी मुल्क से उठी बतलाते हैं। उत्तर और पश्चिम तरफ यह मुल्क कोहिस्तान है, बाक़ी सब जगह बराबर मैदान, और नदी नाले और नहरों के पानी से बिलकुल सिंचा हुआ। कोरिया के मध्य में पहाड़ों की एक श्रेणी है, दक्षिण भाग तो उपजाऊ और आबाद है, पर उत्तर वह प्रायद्वीप बिलकुल ऊसर और वीरान है। तातार की धरती आस पास की विलायतों के बनिस्बत बहुत बलन्द है, और मैदान उसके दर्मियान बहुत बड़े बड़े। शामू का पटपर जिसे कोबी अथवा गोबी भी कहते हैं प्राय १४०० मील लम्बा है, और उस में अक्सर काला रेगिस्तान है। तातार की धरती बहुधा वीरान और पटपर पानी से खाली है। ज़मीन तिब्बत की भी तातार की तरह बलन्द है, पर इस में मैदान कम और कोहिस्तान बहुत, और दरख्तों से दोनों खाली, इस मुल्क में आबादी बहुत कम है, और ग़ल्ला भी थोड़ा पैदा होता है, कैलास का पहाड़, जिसे हिन्दू लोग महादेव के रहने की जगह बतलाते हैं, हिमालय का टुकड़ा तिब्बत के मुल्क में समुद्र से तीस हज़ार फ़ुट ऊंचा है, वहां के पहाड़ अकसर बहुत ऊंचे और बारहों महीने बर्फ़ से ढके रहते हैं। चीन और बर्म्हा के बीच में हिमालय की शाखा समुद्र तक चली गई है, ज्यों ज्यों पूर्व को बढ़ी नीची होती गई। नदियां चीन में बहुत हैं, लेकिन हुअंगहो और याङ्त्सीकायङ्मशहूर और बड़े दर्या हैं। हुअंगहो तो तिब्बत और तातार के बीच

रयिको पहाड़ से निकलकर २६०० मील बहनेके बाद समुद्रमें गिरती है, और याङ्ग्त्सकायङ तिब्बत से निकलकर २२०० मील बहने के बाद नानकिङ शहर से कुछ दूर आगे बढ़ कर हुअंगहो से मिल जाती है। इन में बहुतेरी छोटी छोटी नदियों का पानी आताहै और इन से कितनी ही नहरें काटी गई हैं, कि जिनसे खेतियां भी सींची जाती हैं, और तरी का रास्ता भी किश्तियों के आने जाने के वास्ते खुला रहताहै। बादशाही नहर कांटनके पाससे पेकिन तक प्राय आठ सौ मील लंबी होयगी, चौड़ी एक सौ फ़ुट है, और गहरी ६॥ फ़ुट। आमुर नदी जिसे साघालियन भी कहते हैं २००० मील तातार में बहकर साघालियन के टापू के साम्हने समुद्र से मिलगई है। झीलें चीनके मुल्क में बहुत सुथरी सुहावनी निर्मल नीर से भरी हुई रम्य और मनोहर स्थानों में हैं, विशेष करके पयंगकी झील, कि जिसके चारों तरफ़ पहाड़ और जंगल पड़ा है। तातार में नोरज़ैसां झील १५० मील लंबी और ४० मील चौड़ी, और पलकसी झील २०० मील लंबी और १०० मील चौड़ी है। तिब्बत में कैलास और हिमालय के बीच मानसरोवर और रावणह्रद जिन्हें वहांवाले माणा अथवा मानतलाई और राकसताल कहते हैं दो झील हैं, मानसरोवर प्राय १५ मील लंबा और ११ मील चौड़ा है और वैदिक और बौध दोनों मज़हबवालों का तीर्थ है। धरती चीन की उपजाऊ है, वहां के आदमी खेतों के सींचने और खात से दुरुस्त करने में बड़ी मिहनत करते हैं। चावल इफ़रात से पैदा होता है, और बहुधा उस मुल्क के आदमियों की वही खुराक़ है फ़सल इस की साल में दो और कहीं कहीं तीन भी पैदा करलेते हैं, गेहूं इत्यादि अन्न और तरह बतरह के फल फूल भी अच्छे पैदा होते हैं, पर सब से ज़ियादः

क़ीमती चीज़ ख़ास उस मुल्क की पैदाइशों में चाय है। दो प्रकार के पेड़ वहां ऐसे पैदा होते हैं, कि उन में से दो चीज़ें मोम और चर्बी की तरह निकलती हैं, और बत्ती बनाने के काम आती हैं। कपूर के पेड़ भी वहां बहुत होते हैं, काट काट कर घास के साथ लोहे के देगों में उनका मुंह बंद करके आग पर चढ़ा देते हैं। कुछ देर में काफ़ूर उन दरख़्तों के पत्ते और टहनियों से जुदा होकर घास में जम जाता है (१) जंगलों में चीन के हाथी गैंड़े अरने शेर जंगली बैल और हिरन इत्यादि की बहुतायत से हैं, और घरेलू जानवरों में घोड़े कुत्ते सूवर मुर्ग़ी और बतक इत्यादि गिने जाते हैं। कस्तूरिये हिरन याक अर्थात् सुरागाय भेड़ी शाल की बकरी और जंगली गधे तिब्बत में होते हैं, और गोरखर तातार में। खान से चीन में सोना चांदी तांबा लोहा पारा और कई प्रकार के जवाहिर निकलते हैं। कोरिया में सोने चांदी दोनों की खान है। और समुद्र से मोती निकालते हैं। तिब्बत में नमक सुहागा और शंगर्फ़ की खान है, और सोना भी कई जगहों से निकलता है। उत्तराखंड इस मुल्क का सर्द है, पर आब हवा दक्षिण की भी जो गर्मसेर है अच्छी बतलाते हैं। तातार के दर्मियान गर्मी के दिनों में शिद्दत से गर्मी और जाड़ों में सख़्त जाड़ा पड़ता है। तिब्बत में जाड़ा हद से ज़ियादः पड़ता है, और हवा वहां की निहायत ख़ुश्क है। चीन की दारुस्सलतनत का नाम पेकिन अथवा पेचिन है, वह शहर ४० अंश उत्तर अक्षांस और ११७ अंश

---

(१) सुमित्रा और बर्मिओं के टापुओं में दरख़्तों के पिंडों के अंदर गुद्दे की जगह कपूर रहता है, चीर कर निकाल लेते हैं, आग पर नहीं चढ़ाना पड़ता।

पूर्व देशांतर में पच्चीस मील के घेरेका बसता है, और उसकी शहर पनाह तीस फुट ऊंची है, दरवाज़े उसमें नौ बहुत खूबसूरत हैं, और उसके अंदर बादशाही महल बड़े शानदार बने हैं, रास्ते चौड़े और सीधे हैं, और नहर उनके दर्मियान से बहती है। लार्डमेकार्टनी साहिब इस शहरमें तीस लाख आदमीकी आबादी अनुमान करते हैं। चोरी न होने के वास्ते वहां हुक्महै कि शाम बाद बिना रौशनी लिये कोई घर से बाहर न निकले। शहर के बीचोंबीच एक तालाब कोस एक लम्बा और कुछ कम चौड़ा बहुत उमदा बना है, उसके चारों तरफ़ बेदमजनू के दरख्त लगे हैं, और बीच में एक टापू है, उसपर एक मंदिर बना है, और पुल उस तालाब के ऊपर संगमर्मर का बांधा है। तातार में यार्क़न्द पेकिन से २४०० मील पश्चिम और काशग़र यार्क़न्द से १५० मील वायुकोन को मशहूर है। तिब्बत का बड़ा शहर लासा पेकिन से १८०० मील नैर्ऋतकोन है, लामा गुरु उसी जगह रहता है, वह शहर प्राय चार मील लम्बा और एक मील चौड़ा है। शहर के बीच में एक बहुत बड़ा मन्दिर बना है, उस पर तमाम सोने का काम हुआ है। आदमी की बनाई हुई तअज्जुब की चीज़ों से इस मुल्क में एक बहुत बड़ी दीवार है, यह दीवार असली चीन की उत्तर हद्द पर है, पन्दरह सौ मील अर्थात् साढ़े सात सौ कोस से अधिक लंबी और बीस फुटसे लेकर तीस फुट तक ऊंची है और चौड़ी भी इतनी है कि उसके ऊपर छ सवार बराबर रकाबसे रकाब मिलाकर चल सकते हैं, और सौ सौ गज़ के तफ़ावत पर बुर्ज रखे हैं, जहां पहाड़ और दर्या दर्मियान में आगये हैं वहां भी इस दीवारको उन पर पुल डालकर लेगये हैं, अर्थात् खड और नदियोंपर पुल बनाया है और फिर पुलके ऊपर दीवार उठाई है। चीनी का

मीनार यङ्गत्सीकायङ के दहने कनारे नान्किङ्ग के शहर में अष्टकोन दो सौ फुट ऊंचा बना है, उसका व्यास अर्थात् दल ४० फुट होगा और नौ उस में मरातिब हैं, ऊपर चढ़ने के लिये ८८४ सीढ़ियां लगी हैं। वहांवाले उस की लागत अस्सी लाख बतलाते हैं (१) आदमी असली चीन के खुदपसंद कायर कपटी हासिद शक्की कीनःवर चालाक मिहनती मुतहम्मिल हलीम और खुश अखलाक होते हैं। चिहरे उन के ज़र्द पेशानियां बलन्द आंखें छोटी और बाल काले। औरतों के पैर के पंजों का छोटा होना इस मुल्क की खास और मशहूर बातों से है, जितना जिस औरत के पैर का पंजा छोटा होता है उतनी ही वह खूबसूरत गिनी जाती है, यहां तक कि उस मुल्क में ज़नाने जूते चार इंच से अधिक लम्बे नहीं बनते, यह रस्म वहां हजार बरस से निकली है। कहते हैं कि एक दफ़ा औरतों ने मिलकर बादशाहपर हमला किया था, तभी से यह आईन जारी हुआ, छोटी ही उमर में उन के पैर के पंजे ऐसे कसकर पट्टियों से बांध रखते हैं; कि फिर बड़े होने पर वे बढ़ने नहीं पाते, और यही कारन है कि यद्यपि वहां की औरतें पर्दा नहीं करतीं, जाली झरोखों में मुँह खोले बैठी रहती हैं, पर तौ भी घर से बाहर कम नजर पड़ती हैं, क्योंकि पंजा पैर का छोटा रहने से चलना फिरना उन को बहुत कठिन है। लड़कियों को वहांवाले भी रजपूतों की तरह हलाक करडालते हैं, पर बहुत कम। मज़हब चीनियों का बौध है, गोश्त चीन के बादशाह की अमलदारी में सब खाते हैं। देवी देवतों की वहां हिन्दुस्तान से भी जियादती है ऐसा पहाड़ दून जंगल

---

(१) सुनते हैं कि बदमाशों ने बलवा करके अब इस मीनार को बिलकुल ढाह डाला॥

जिला घर आर दूकान कोई नहीं कि जिसका एक जुदा देवता मुक़र्रर न हो बरन गरजना चमकना बरसना आग अन्न दौलत जन्म मृत्यु सीतला नदी झील चिड़ियें मछली जानवर इत्यादि के भी अलग अलग देवता हैं, एक पादरी बढ़ावे की राह से कहता है कि चीनियों के देवता दर्या के बालू से भी अधिक हैं। वे लोग ज्योतिष और यंत्र मंत्र में भी बड़ा निश्चय रखते हैं, बौध मत के अनुसार पुनर्जन्म का होना सत्य मानते हैं, और हिंसा करना बहुत बुरा जानते हैं। उस मत में नीचे लिखे हुए पांच महावाक्य हैं। हिंसा मत करो १। चोरी मत करो २। झूठ मत बोलो ३। शराब मत पीयो ४। और जो साधु संत बनो तो बिवाह न करो ५। मुसल्मान भी उस अमल्दारी में बहुत रहते हैं। तातार के आदमी खूख़ार लड़ाक आज़ादमनिश और शिकार दोस्त हैं, घोड़े बहुत रखते हैं, उन का गोश्त भी खाते हैं, और घोड़ियों का दूध बड़े स्वाद के साथ पीते हैं। वे गांव और शहरों में नहीं बस्ते जहां अच्छी चराई और नज़दीक पानी पाते हैं उसी मुक़ाम पर कुछ दिनों के वास्ते अपनी भेड़ी बकरी और शकट लेजाकर खेमे खड़े कर देते हैं, कोई उन में से अपने मुर्दों को आग में जलाता है कोई मिट्टी में गाड़ता है कोई कुत्तों को खिला देता है, और कोई काट काट कर आपही खा जाता है। तिब्बत के आदमी मिहनती और संतोषी हैं, लेकिन आदमीयत की बूबास कम रखते हैं, वे हमेश: गर्म कपड़े पहनते हैं, गर्मी में केवल ऊनी और जाड़ों में पोस्तीन समेत। चीनके आदमी तीरंदाज़ी में उस्ताद हैं, कुर्सियों पर बैठते हैं। और मेज़ पर खाना खाते हैं, कांटे की जगह दो पतली पतली सलाइयां हाथीदांत अथवा सोने चांदी की रखते हैं, उसी से उठा उठाकर खाना खाते हैं, हाथ नहीं लगाते। खाना बहुत क़िस्म का पकाते हैं, रीछ के पंजे, घोड़े के सुम,

चौपायों के खुर, और चिड़ियों के घोसलों तक उन के शोरवे में काम आते हैं, बिरली चीज़ दुनियां में ऐसी होवेगी कि जिसको चीन के आदमी नहीं खाते। अमीरों के मकान की दीवारें साटिन इत्यादि क़ीमती कपड़ों से मढ़ी रहती हैं, और उन पर नीति के बचन बहुत खूबसूरती के साथ लिखे रहते हैं! औरतें सिर के ऊपर बालों का जूड़ा बांध कर उन में फूल लगाती हैं। यद्यपि वहां विधवा औरतों को दूसरी शादी करने का इख्तियार है, लेकिन सो भी न करना बड़ी इज्ज़तकी बातहै। मसहरी में वहां के गरीब ज़मींदारभी सोते हैं। चाय और तंबाकू वे लोग बहुत पीते हैं, यहां तक कि हर शख्स एक ज़रदोज़ी बटुआ तंबाकू से भराहुआ कमर में रखताहै, वरन औरतें भी तंबाकू पीती हैं। पोशाक वहांवालों की लंबी आस्तीन वाला कुरता पाजामा पोस्तीन और चुग़ा है, लेकिन टोपियां मरदों की इतनी चौड़ी होती हैं कि मेह पानी में छतरी की कुछ ऐसी इहतियात नहीं पड़ती। पंखी एक छोटीसी सदा सब के हाथ में रहती है, बांएं हाथ के नाखून वहां के आदमी नहीं तराशते बढ़ने देते हैं, कि जिस में लोग उनको मिहनती मज़दूर न समझें, पतंग उड़ाने का बड़ा शौक़ रखते हैं, लाखों आदमी वहां अपने घरबार समेत किश्तियों हीं पर गुज़ारा करते हैं, और रात दिन जल हीं में डेरा रखते हैं, एक क़िस्म की चिड़िया को ऐसा साधते हैं कि वह पानी में से मछली पकड़ कर उन्हें ला देती है, इन चिड़ियों के गले में छल्ले पड़े रहते हैं जिसमें मछलियों को निगलने न पावें, जब हज़ारों चिड़ियें इस तरह की एक बारगी छुटतीं हैं तो देखते ही देखते शिकारी के साम्हने मछलियों का ढेर लग जाता है। सती अगले ज़माने में चीन और तातार के दरमियान होती थीं, अब यह ख़राब रसम बहुत दिनों से मौक़ूफ़ हो गई।

पीला रंग वहां के बादशाह का है, अर्थात् इस रंग का कपड़ा सिवाय बादशाह के और कोई नहीं पहिन्ने पाता, जिस किसी के पास इस रंग का कपड़ा दिखलाई देवे उसको ज़रूर शहज़ादों से ख़याल करना चाहिये। चीनी लोग अपने मुरदों को ज़मीन पर रख के ऊपर से क़बर बना देते हैं, अकसर वहां के आदमी अपने बुज़ुर्गों की लाश को मसाले लगाकर मुद्दत तक संदूक़ के दरमियान घर में रख छोड़ते हैं, जो हो वहां के आदमी अपने पुरखा और पित्रों को बहुत मानते हैं, और मुद्दतों तक याद रखते हैं। इल्म की क़दर होने के बाइस वहां के आदमी पढ़ने लिखने में बड़ी मिहनत करते हैं, भिसकानर लिखती है कि एक ग़रीब का लड़का जो दिन भर अपने मा बाप का पेट भरने के वास्ते उद्यम करता था और इतना भी मक़दूर न रखता था कि रात को चिराग़ जलाने के लिये तेल बाज़ार से ख़रीद लावे तो वह क्या काम करता कि जंगल से जुगनू पकड़ लाता और उनको बारीक कपड़े में रखकर उन्हीं की रौशनी से किताब पढ़ा करता, और इसी तरह पढ़ते पढ़ते कुछ दिनों में ऐसा फ़ाज़िल हुआ कि बादशाह ने उसको अपना वज़ीर बनाया, निदान वहां विद्या का बड़ा प्रचार है, बिरला ऐसा होगा जो लिखना पढ़ना न जाने। जब से तातारियों ने चीन को फ़तह किया वहांवाले उन के हुक्म बमूजिब सारे सिर के बाल मुड़वाकर केवल एक पतली सी पैर तक लंबी चोटी रखते हैं। चीन में सिपाही की बनिस्बत मुंशी की इज्ज़त बहुत ज़ियादः है, और वहांवाले महाजन और सौदागर की बनिस्बत किसान और ज़मींदारों की बड़ी क़दर करते हैं, यहां तक कि साल में एक दिन ख़ुद बादशाह अपने हाथ से हल जोतताहै, और उस दिन को बड़ा त्योहार मानते हैं। जब बादशाह मरजाता

है तो सारे मुल्क के आदमी सौ दिन तक मातम रखते हैं, और कोई काम खुशी का नहीं करते। वहां के हाकिम जब बाहर निकलते हैं, उन के जलेब में जल्लाद और कोड़े बर्दार और जंजीरवाले आगे चलते हैं, यदि रास्ते में किसीको कुछ बुरा काम करते हुए पाते हैं, तो उसी दम और उसी मुक़ाम पर उसे सज़ा दे देते हैं। रुपये अशरफ़ियों के बदल वहां चांदी सोने के कुर्स (१) और छेदवाले (२) तांबे के पैसे चलते हैं। तिब्बतवालों की ज़ुबान वही है जिसे भोटिया बोली कहते हैं, पर शास्त्र उन के बहुधा प्राकृत भाषा में लिखे हैं। ये लोग अपनी विद्याकी जड़ काशी बतलाते हैं। चीनियों की भाषा में भूगोल खगोल बैदक काव्य अलंकार इत्यादि सारी विद्या मौजूद हैं, और तवारीख़ अर्थात् इतिहास तो उनके यहां सारी क़ौमों से बढ़कर है। शब्द उन के समस्त एकाक्षरी हैं, अर्थात् प्रत्येक शब्द के वास्ते एक जुदा अक्षर मौजूद है, और इसी कारण उन की वर्णमाला में ८०००० अक्षर गिने जाते हैं, इन में २१४ तो असली हैं, और बाक़ी संध्यक्षर अथवा युक्ताक्षर हैं, और इसी वास्ते ग़ैर मुल्कवालों को उन की ज़ुबान का लिखना पढ़ना सीखना बहुत मुश्किल है। वहांवालों के लिये गांव गांव में इस्कूल मुकर्रर हैं, छ बरस धर्मशास्त्र कंठ करनेमें जाता है, और छ बरस में व्याकरण काव्य अलंकार और इबारत लिखना

---

(१) कुर्स सौ सौ पचास पचास तोले के और इस से न्यूनाधिक भी होते हैं सूरत उनकी नाव की तरह॥

(२) पैसों के बीच में छेद रहता है और उनको एक रस्सी में माला की तरह पिरो रखते हैं, जिसको जितने पैसे देने होते हैं उतने पैसों पर गिरह देकर रस्सी काट देते हैं॥

सीखते हैं, निदान बारह बरस बाद वे परीक्षा देने के योग्य होते हैं और हर ज़िले में तीन साल के बीच दो बार परीक्षा ली जाती है, जो विद्यार्थी इस पहली परीक्षा में पूरे उतरते हैं वे उस सूबे के जिस में वह ज़िला होता है हाकिम के पास दूसरी परीक्षा के लिये भेजे जाते हैं, और जो विद्यार्थी उस हाकिम की परीक्षा में जचते हैं उन को वह एक एक सार्टीफ़िकट देकर बड़े सूबेदार के पास भेज देता है, इस तीसरे स्थान में बड़ी कड़ी परीक्षा होती है, पहले सारे विद्यार्थियों की तलाशी लेलेते हैं कि जिस में उन के पास कोई लिखा हुआ काग़ज़ या किताब न रहे, और फिर एक एक को जुदा जुदा कोठरी में बंद करदेते हैं, वहां वे प्रश्नों का उत्तर लिखकर दूसरों के साथ मिल न जाने के लिये उन पर चिन्ह मात्र कर देते हैं नाम लिखने की मनाही है कि जिस में परीक्षक किसी की तरफ़दारी न करे, निदान इस तीसरी परीक्षा में जो निपुण ठहरता है उसे पहले दर्जे का विद्यार्थी कहते हैं, और वह नीले रंगका कपड़ा सियाह गोट लगा हुआ पहनता है, और अपनी टोपी पर एक चांदी की चिड़िया रखता है, चौथी परीक्षा सूबे के सदरमुक़ाम में तीसरे साल बादशाह के दीवान और उस सूबे के सारे हाकिमों के साम्हने होती है, कोठरियों पर पहरे तैनात रहते हैं, यदि प्रश्नों का उत्तर लिखने में एक अक्षर की भी भूल रहे तो परीक्षकलोग उस काग़ज़ को फेंक देते हैं, और उस में से विद्यार्थी का निशान काटकर दर्वाज़ेपर चिपका देते हैं, जिस में विद्यार्थी को इस बात की ख़बर भी पहुँच जाय और सभा के सामने लज्जित भी न होना पड़े, जो विद्यार्थी इस चौथी परीक्षा से पारहुए उन के मानो भाग्य जागे उन के नाम टिकटों पर लिखकर शहर में हर तरफ़ लटकाए जाते हैं, हाकिम उन के मा बाप और रिश्तेदारों

को बुलाकर बड़ी खातिर करते हैं, उमराव उन की दावत करते हैं, और खिलत देते हैं, फिर उन को वहांवाले क्यूजिन अर्थात् श्रेष्ठजन पुकारते हैं, और वे ऊदेरंग का कपड़ा कालीगोट लगाकर पहनते हैं, और टोपी पर सोने की चिड़िया रखते हैं, उन को सब तरह के सरकारी उहदे मिल सकते हैं, और यदि वे बुद्धि और विवेक के साथ काम करें थोड़ेही दिनों में धनवान और बड़े आदमी बन जाते हैं, पर चौथी परीक्षा के ऊपर दो दर्जे और भी रखे हैं, जो क्यूजिन लोग उन दर्जों के पाने की चाह रखते हैं उन्हें पेकिन में जाना पड़ता है, और वहां उनकी परीक्षा तीसरे साल राजधानी के बड़े पाठशाला हानलिनकालिज में ली जाती है, प्राय दसहज़ार क्यूजिन, जो परीक्षा देने के लिये आते हैं, उन में से प्राय तीन सौ पक्के ठहरते हैं, और तब उन तीन सौ की परीक्षा बादशाह के साम्हने ली जाती है, इस आख़िरी परीक्षा में जो जीते वह अपने मन की मुराद को पहुंचे, डंके निशान के साथ बड़े जुलूस से शहर में घुमाते हैं, और उसी दम हानलिनकालिज में भरती होजाते हैं, वज़ीरी इत्यादि बड़े उहदे ख़ाली होने पर उन्हीं को मिलते हैं, और इस बन्दोवस्त से गांव के कारदारों को भी सारा धर्मशास्त्र जिसके बमूजिब काम करना पड़ता है कण्ठ याद रहता है। हिक्मत और कारीगरी चीनियों की मशहूर है, यद्यपि वे लोग अबतक धूंएं के जहाज़ और गाड़ियां और टेलिग्राफ़ अर्थात् तार की डाक इत्यादि काम की चीजें और तरह बतरह की कलें जो इंगलिस्तान में तयार होती हैं बनानी नहीं जानते, पर तौ भी बारीकी सफ़ाई नज़ाकत और खूबी में वहां के कारीगरों की किसी मुल्क के भी आदमी बराबरी नहीं करसकते। ये लोग छापना और बारूत बनाना और चुम्बक को काम में लाना

अर्थात् दिशा देखने के लिये कम्पास इत्यादि तयार करना उस में भी पहले जानते थे कि जब से वह फ़रंगिस्तान में ईजाद हुए। बर्तन चीनी के स्वच्छ और सुन्दर होते हैं (१) यह हिक्मत चीनियों ने बारह सौ बरस से पाई है। क़ंदीलें चीन की मशहूर हैं, निहायत उमदा रंग बरंग की बड़ी हिक्मत से तयार करते हैं, और इस को मकान की सजावट में पहली चीज़ समझते हैं, जो क़ंदील दर्वाजे पर लटकाई जाती है उसपर मकान के मालिक का नाम भी बहुत ख़ूब सूरती के साथ लिखा रहता है आगे ये लोग शीशा बनाना नहीं जानते थे, लेकिन अब यह फ़न भी उन लोगों ने फ़रंगियों से सीख लिया। इस बातमें वहां के आदमी बड़े उस्ताद हैं कि जैसी चीज़ देखें वैसी ही बना लेवें, एक फ़रंगिस्तान का सौदागर बड़ा क़ीमती मोती बेचने के लिये उस मुल्क में ले गया था, वहां के आदमी हर रोज़ उस मोती के देखने को आया करते, एक दिन एक चीनी ने कई सौ रुपये बयाने के देकर उस मोती की डिबिया पर मुहर कर दी, और यह क़रार किया कि जब बिलकुल रुपया दूंगा मोती ले जाऊं-गा, ग़रज़ वह चीनी फिर न आया, और उस सौदागर के जहाज़ खुलने का दिन पहुंचगया, यद्यपि मोती न बिका पर तौभी उसका मन निश्चिन्त था, क्योंकि बयाने में उसका राहख़र्च से भी अधिक रुपया मिलगया था, निदान जब घर आकर उस चीनी की मुहर को तोड़कर मोती डिबिया से बाहर निकाला, और एक जौहरी को

---

(१) वहां एक तरह का पत्थर होता है, उसको एक प्रकार के मिट्टी के साथ कि वह भी ख़ास उसी मुल्क में होती है मिलाकर ये बर्तन बनाते हैं॥

बेचने के वास्ते देने लगा तो मालूम हुआ कि वह मोती झूठा है, चीनी ने हथ फेर किया, सच्चा मोती तो उड़ा लिया और वैसा ही मोती झूठा बनाकर उस डिबिया में रख दिया। वहां के आदमी हाथीदांत पर ऐसी नक़ाशी करते हैं कि गोले के अन्दर ही अन्दर दूसरे जालीदार गोले तराशते और उन पर नक़ाशी करते चले जाते हैं। यद्यपि बारूत का बनाना ये लोग बहुत दिनों से जानते थे, परंतु तोप का ढालना डेढ़ ही सौ बरस से सीखा है। चाय रेशम नानकीन कपड़ा चीनी के बर्तन शक्कर दारचीनी काफ़र काग़ज़ हाथीदांत और कचकड़े की चीज़ें और खिलोने इत्यादि वहां से दिसावरों को जाते हैं। पौने सात लाख मन चाय हरसाल कांटन से जहाज़ों पर लदती है। छींट बनात कपड़े ऊद बिलाव के चमड़े गैंडे के खाग मोर के पर और शंख इत्यादि अंगरेज़ी और हिन्दुस्तानी चीज़ें अकसर तिब्बत की राह भी चीन में पहुंचती हैं। तिब्बत से पश्मीना कश्मीर में आता है, और फिर वहां से शाल दुशाले बनकर चीन को जाते हैं। यद्यपि चीन के आदमी अपनी तवारीखों में बहुत पुराने ज़मानों का हाल लिखते हैं, लेकिन जिनपर कि एतमाद हो सकता है वह इकतीस सौ बरस से इधर के हैं कि जब चौ बादशाह और कानफ्यूशियस हकीम पैदा हुए, प्राय ८०० बरस वहां की बादशाहत चौ के खानदान में रही, परंतु उस समय खंड खंड के जुदा जुदा राजा थे बादशाह केवल नाम को था, चीन बादशाह ने उन सब को अपने अधीन किया, और तातारियों के हमले से बचने के वास्ते वह बड़ी दीवार बनाई कि जिसका हाल ऊपर लिख आये हैं, प्राय सौ बरस बादशाहत उसके खानदान में रहकर फेर हान के वंश में आई। सन् ६२२ से ८९७ तक तांग के खान-

दान में रही, फिर ५३ बरस बदअमली रहकर सुंग के घराने में आई। तेरहवीं सदी के अखीर में मुग़लों ने उस विलायत को फ़तह किया, और ८५ बरस अपने क़बज़े में रखा। काबलेखां चंगेज़खां का पोता इस खानदान में बड़ा नामी हुआ। सन् १३६६ से सन् १६४४ तक यह सल्तनत फिर चीनियों के हाथ में अर्थात् मिंग के खानदान में रही। सन् १६४४ में तातारियों ने उसे दबाया, और शंची नाम उनका बादशाह वहां के तख्त पर बैठा, तब से अब तक उसी घराने में वह सल्तनत चली आती है, और चीन और तातार दोनों विलायतों की एक ही बादशाहत गिनी जाती है। इन तातारी बादशाहों ने बिलकुल चालचलन और तरीक़े चीनियों के इख्तियार करलिये, इस बाइस से वह बादशाह उनको परदेशी नहीं मालूम होते। इन लोगों का यह आईन है कि परदेशी को अपने मुल्क में नहीं आने देते, केवल एक बंदर कांटन का ग़ैर मुल्क के सौदागरों के वास्ते मुक़र्रर था, उसी मुक़ाम पर फ़िरंगिस्तान के भी सब सौदागर लोग आकर चीनियों के साथ लेन देन किया करते थे, अंगरेज़ लोग अफ़यून की तिजारत से बड़ा फ़ाइदा उठाते थे, और बादशाह के यहां से अफ़यून बेचने की इन लोगों को मनाही थी, क्योंकि इसके खाने से उसकी रअय्यत का नुक़सान था, और सब लोग अफ़यूनी हुए जाते थे, नाचार जब अंगरेज़ अफ़यून बेचने से न रुके तो उसने सन् १८३९ में उनके जहाज़ों की तलाशी लेकर प्राय बीस हज़ार अफ़यून के संदूक़ दरया में डुबा दिये, उसको सरकार अंगरेज़ी की क़ुदरत और ताक़त मालूम न थी, वह सब तक दुनियां में अपने से अधिक बरन बराबर भी किसी को नहीं समझता था, निदान इस ज़ियादती का बदला लेने के वास्ते कई एक

दुखानी (१) और जंगी जहाज़ कुछ फ़ौज के साथ सरकार की तरफ़ से चढ़ गये, और बाद बहुत सी लड़ाइयों के यह सरकारी फ़ौज फ़तह फ़ीरोज़ी के निशान उड़ाती हुई नान्किङ शहर में दाखिल हुई, और क़रीब था कि दारुस्सल्तनत पेकिन को लेलेवे, परंतु उनतीसवीं अगस्त १८४२ को बादशाह के मोतमदों ने आकर बमूजिब सरकारकी तजवीज़की हुई शर्तों के सुलह करली, और सुलहनामे पर दस्तखत कर दिये, इस सुलहनामे की रूसे चीन के बादशाह को हाङ्काङ का टापू हमेशः के वास्ते अंगरेज़ों के हवाले करदेना पड़ा, और एक बंदर कांटन की जगह पांच बंदर अर्थात् कांटन एमायफूचूफू निङ्पो और शांघे उन के वास्ते खोलना और चार करोड़ साढ़ेबहत्तर लाख रुपया लड़ाई का खर्च और अफ़यून का नुक़सान अदाकरना पड़ा। एक साहिब जो उस लड़ाई में मौजूद थे चीनियों की जवांमर्दी और लड़ने का हाल इसतरह पर बयान फ़र्माते हैं, कि जब सरकारी फ़ौज की किश्तियां एक क़िले के नज़दीक़ पहुंचीं कि जो दर्या कनारे था तो क्या देखते हैं कि उस क़िले के सब आदमी बाहर दर्या कनारे आकर बड़े बड़े काग़ज़ के अज़दहे और देव अंगरेज़ी फ़ौज को दिखला दिखला कर कलों के जोर से उन के हाथ और मुंह हिलाते हैं, निदान जब सरकारी फ़ौज ने देखा कि उनके पास न तोप है न कोई दूसरा हथियार केवल लड़कों की तरह खिलौनों से डराना चाहते हैं तो उन के लड़कपन पर रहम खाकर सिपाहियों ने फ़ौरन् कारतूसों से गोलियां दांत से काट काटकर निकाल डालीं और खाली बंदूकें छोड़ीं, आवाज़ की भी बंदूक़ की उन पर ऐसी दहशत ग़ालिब हुई

(१) दुखानी जहाज़ उसे कहते हैं जो धूंएं के ज़ोर से चलता है॥

कि सब के सब एक लहज़े में काफ़ूर हो गये। बादशाह वहां का शहंशाह कहलाता है, मुसल्मान उसको ख़ाक़ां और फ़ग़फ़ूर कहते हैं (१) और रऐयत उसको अपने बाप की तरह जानती है, और बाप के नाम से पुकारती है। अंगरेज़ लोग वहां के सर्दारों को मैंड-रिन कहते हैं। तिब्बत का मालिक लामा गुरु कहलाता है, लेकिन वह केवल पूजने के वास्ते है, चीनी लोग उसको साक्षात बुध का अवतार मानते हैं, और कहते हैं कि वह अमर है, जब उसका बदन बुढ़ापे से जीर्ण होता है तो शरीर बदल लेता है, पर अंगरेज़ लोग इस बात को केवल उसके कार्दारोंका फ़रेब समझते हैं, और इसतौर पर ख़याल करते हैं, कि जब लामा गुरु मरजाता है तो उसके कार्दार किसी तुर्त के जनमें हुए लड़के को लाकर गद्दीपर बैठा देते हैं और फिर उसको ऐसे ढब से सिखाते पढ़ाते हैं, कि वह सारी बातें पहले लामाओं के वक़्त की बतलाने लगता है, और उसके चेले और शिष्य उन को करामात समझकर निश्चय मान जाते हैं। सन् १७८३ में जब कप्तान टर्नर साहिब सरकार की तरफ़ से सफ़ीर अर्थात् दूत बन कर तिब्बत को गये थे तो उस वक़्त लामा की उमर कुल अठारह महीने की थी, लेकिन कप्तान साहिब अपनी किताब में लिखते हैं कि मुलाक़ात के वक़्त वह बड़े गौरव और प्रतिष्ठा के साथ मसनद पर बैठा रहा, और बराबर इन की तरफ़ मुतवज्जिह रहा, जब कप्तान साहिब कुछ बात कहते तो जवाब में वह इस अंदाज़ से गर्दन हिला-ता कि जैसे कोई बड़ा आदमी किसी बात को समझकर इशारा

---

(१) फ़ग़फ़ूर का असल बगपूर है, अर्थात् भगवान का बेटा, बग प्राचीन फ़ारसी भाषा में भगवान को और पूर पुत्र को कहते हैं॥

करे, जब कप्तान साहिब का पियाला चाय से खाली होता तो वह भवें चढ़ाकर और सिर हिलाकर चिल्लाता और अपने आदमियों को चाय देने का इशारा करता, बरन एक सोने के पियाले से कुछ मिठाई निकाल कर अपने हाथ से कप्तान साहिब को दी। लामा जो शरीर छोड़ता है सुखलाकर और उसपर चांदी की खोल चढ़ाकर मंदिर में पूजा के वास्ते रखदेते हैं। मुल्क का कारबार उसका नायब जिसे राजा कहते हैं करता है, लेकिन हक़ीक़त में इख़्तियार बिलकुल उस सूबेदार का है कि जो चीन के बादशाह की तरफ़ से वहां रहता है। आईन और इंतिज़ाम चीन का एशिया के सब मुल्कों से बिहतर है, वहां का बादशाह चार वज़ीर रखता है, और उनके नीचे छ महकमे हैं, पहले महकमे के हाकिमों का यह काम है कि हर एक उहदे पर उसके लाइक़ आदमी मुक़र्रर करें और देखें कि हर एक उहदेदार अपना अपना काम बखूबी अनजाम देता है, दूसरे के ज़िम्मे माल का काम है, तीसरे का काम यह है कि लोगों का चाल तरीक़ा और दस्तूर दुरुस्त रखे, चौथे के ज़िम्मे लशकर है, पांचवें के ज़िम्मे सज़ा देना गुनहगारों को, और छठे महकमे के हाकिम इमारत और सड़क दुरुस्त रखते हैं, सिवाय इन महकमों के दारुस्सल्तनत में हानलिन नाम एक बड़ा पाठशाला है, जबतक वे लोग जो ज़िले के इस्कूलों में विद्या उपार्जन करते हैं इस मदरसेवालों के साम्हने परीक्षा में नहीं उतरते कोई बड़ा उहदा नहीं पाते। रिशवत लेने की सज़ा वहां फांसी है। वहां कुछ यह दस्तूर नहीं है कि अमीर ही के लड़के या बादशाह के संबंधी बड़े कामों पर मुक़र्रर हों, बरन जो मनुष्य जैसा पढ़ा लिखा होता है और इस्कूल में जिस दर्जे की परीक्षा देता है उसी दर्जे का उसको काम मिल जाता है, चाहे वह ग़रीब से ग़रीब ज़मींदार का लड़का क्यों न हो। यह

भी वहां का आईन है कि यदि किसी ने फांसी दिये जाने का अपराध किया हो, और उसके मा बाप बूढ़े हों, और उनके कोई दूसरा बेटा या पोता सोलह बरस से जियादः का न हो, तो उसका अपराध सरकार से क्षमा होता है, निदान वहां मा बाप की बड़ी इज्जत और क़दर है, एक आदमी ने अपनी मा पर हाथ चलाया था सो उसने बादशाह के हुक्म से उसी दम फांसी पाई, और उसका घर ढाहा गया, और उसकी स्त्री और उस ज़िले के हाकिम को भी सज़ा मिली, सच मा बाप का ऋण लड़का लड़कियों पर ऐसा ही है कि यदि हम लोग अपनी जान तक भी उनकी नज़र करें तो उनके ऋण से कदापि अदा न हों। वहां का यह भी आईन है कि जब साल पूरा होने को एक दिन बाक़ी रहे तो सब लोग अपना हिसाब किताब फ़ैसल करके जिस किसी का जो कुछ देना दिलाना हो दे ले डालें, यदि कोई उस दिन अपना क़र्ज़ अदा न करे तो लेनदार को इख्तियार है जो चाहे उस पर ज़ियादती करे, बादशाह उसकी नालिश फ़र्याद हर्गिज़ नहीं सुनता, इसी वास्ते वहां के आदमी किफ़ायती होते हैं, वाहियात में रुपया नहीं उड़ाते। यह भी वहां का एक दस्तूर है कि यदि कोई बात किसी आदमी से बेजा या गुनाह की बनजावे तो उस आदमी के साथ उस ज़िले के हाकिम को भी थोड़ी बहुत सज़ा मिलती है, क्योंकि बादशाह कहता है कि यदि हाकिम उस आदमी को नीति और धर्मशास्त्र अच्छी तरह समझा देता तो वह ऐसा अपराध क्यों करता, वरन यदि कभी किसी हाकिम के ज़िले में कुछ ज़ियादः ख़राबी पड़जाती है तो उस महकमे के हाकिम तक बादशाह की ख़फ़गी में पड़ते हैं कि जिसके ज़िम्मे हर एक उहदे पर उस उहदे के लाइक़ आदमी मुक़र्रर करने का काम है, और इसी वास्ते गांव

गांव के हाकिम प्रत्येक अमावाश्या के दिन लोगों को धर्मशास्त्र पढ़कर सुनाते हैं, और साल में एक बार ज़िले का हाकिम गांव गांव के हाकिमों को जमाकरके इसी तरह उपदेश देता है। इस धर्मशास्त्र की पुस्तक में चीनियों की आईन बमूजिब पिता माता की सेवा करना पित्रों को मान्ना, आपस में मेल मुवाफ़क़त रखना, किसानी और ज़िमींदारी को सब में अच्छा काम जान्ना, किफ़ायत और मिहनत के फ़ाइदे, विद्या अभ्यास का फल, बादशाह की आज्ञाकारी, ऐसी बातें लिखी हैं। उदाहरण के लिये कुछ थोड़ा सा हाल मेल और मुवाफ़क़त रखने के बिषय में उनके धर्मशास्त्र से तर्जुमा करके इस जगह लिखते हैं, बादशाह तुम लोगों को हुक्म देता है कि आपस में मेल और मुवाफ़क़त रखो जिस से लड़ाई झगड़े और नालिश फ़र्याद यहां से दूर रहे, इस हुक्म को अच्छी तरह दिल देकर सुनो, तुम्हारे रिश्तेदार और वाक़िफ़कारों में बहुतेरे आदमी बूढ़े भी होंगे, और बहुतेरे तुम्हारे हमसबक़ और हमजोली, जब शाम सुबह तुम बाहर जाते हो यह मुमकिन नहीं किसी से तुम्हारी मुलाक़ात न हो, या किसी को तुम न देखो, गांव उसको कहते हैं जिस में कई घर बसें, इन में ग़रीब भी होते हैं और दौलतवाले भी, कोई तुम से बड़े हैं, कोई छोटे, और कोई बराबर। एक पुराने आदमी ने खूब अक़्लमंदी की बात कही है कि ऐसी जगहों में जहां बूढ़े भी रहते हैं और कम उमर भी वहां मुनासिब है कि कम उमर ज़ियादः उमर वालों की ताज़ीम करें, इस बात का हर्गिज़ ख़याल न करें कि वे ग़रीब हैं या अमीर और पंडित हैं या मूर्ख, केवल उमर का लिहाज़ रखें, यदि दौलतमंद होकर तुम ग़रीब से मुँह फेरोगे अथवा ग़रीब होकर अमीरों पर डाह खाओगे तो इस बात से हमेशा के वास्ते तुम्हारे

दिलों में फर्क बना रहेगा, बादशाह कि जो तुम लोगों को हद से ज़ियादः प्यार करता है, नालिश फ़र्याद और मुआमले मुक़द्दमों से बहुत नाराज़ है, और जो कि वह दिल से तुम्हारी खुशी और बिहबूदी अर्थात् आपस की मुवाफ़क़त चाहता है, वह आप तुम्हें उपदेश देता है, कि जिस में तुम्हारे दर्मियान बैर बिरोध न पैद होवे, तुम लोगों ने बादशाह का इरादा बखूबी समझ लिया, तुम को उचित है कि उसके अनुसार काम करो, और यदि तुम उसके अनुसार काम करोगे इस आज्ञाकारी से तुम्हारा अनंत उपकार होगा, और मुझे निस्संदेह निश्चय है कि तुम उसके अनुसार काम करोगे, इसलिये अब तुम घर जाकर बादशाह की अभिलाषानुसार काम करो और अपने पिता अर्थात् बादशाह के मन प्रसन्न होने के कारन हो। फ़ौज चीन के बादशाह की गिन्ती के लिये प्राय १००००००० होवेगी, परंतु काम की सिपाह वही ८०००० जंगी और जरार आदमी हैं जो तातार के मुल्क से भरती हुए हैं। आमदनी वहां के बादशाह की ६०००००००० से अधिक नहीं और इससे मालूम होता है कि वहां की रऐयत को महसूल बहुत कम देना पड़ता है॥

जपान

चीन के पूर्व २६ अंश ३५ कला और ४९ अंश उत्तर अक्षांस के दर्मियान जपान के टापू हैं। नीफ़न सिटकाफ़ और क्यूस्यू ये तीन तो बड़े हैं और बाक़ी छोटे हैं, सब में बड़ा नीफ़न कुछ ऊपर ८००मील लंबा और ९० से लेकर १७० मील तक चौड़ा है। बिस्तार तीनों टापुओं का नब्बे हज़ार मील मुरब्बा से अधिक नहीं है। आबादी उस मुल्क में तीन करोड़ आदमी की अनुमान करते हैं। जंगल उजाड़ कहीं

नहीं, गांव से गांव मिल रहे हैं। ज़मीन बहुधा कोहिस्तान और पथरीली है, ऊंचे पहाड़ों की चोटियों पर बर्फ़ पड़ी रहती है, और कई एक उन में से ज्वालामुखी भी हैं। नदी और झीलें बहुत हैं, परंतु छोटी छोटी। धरती यद्यपि उर्बरा नहीं है लेकिन किसानों की मिहनत से अन्न बहुत उपजता है, और उन्हीं प्रकारों का जो चीन में होता है, चप्पे भर ज़मीन भी खेती से खाली नहीं है, पहाड़ों पर जहां बैलों का हल नहीं चल सकता आदमी हाथ से ज़मीन खोदते हैं, खेती बारी की उन्नति के लिये वहांवालों ने यह आईन जारी रखा है कि जो धरती बरस दिन तक जोती बोई न जावे वह सरकार की ज़ब्ती में आवे। घोड़े और मवेशी की इस मुल्क में कमी है, और गधा खच्चर ऊंट हाथी वहां बिलकुल नहीं होता, दीमक बहुत हैं। खान से सोना चांदी लोहा और तांबा रांगा सीसा पारा गंधक हीरा अक़ीक़ यशम कोयला निकलता है, समुद्र किनारे मोती और मूंगा बहुत उमदः मिलता है, और अम्बर भी हाथ लगता है। मेह वहां बहुत बरसता है, और तूफ़ान अकसर आया करता है। आदमी वहां के चालाक मिहनती निष्कपटी उदार अत्यन्त संतोषी सच्चे ईमान वाले वफ़ादार मिलनसार मुतहम्मिल मुहब्बती मिहमांपर्वर होशयार दूरंदेश, चिहरों पर संतोष की खुशी छाई हुई, चुगली को बहुत बड़ा ऐब समझते हैं, परदेसी का कभी एतबार नहीं करते, छोटे आदमी भी अदब क़ायदे और शऊर सलीक़े के साथ रहते हैं, क्या मक़दूर कि कोई शख़्स गाली या सख़्त बात ज़ुबान पर लावे, या बद ज़ुबान अथवा झिड़क कर बोले। मकफ़ालेन साहिब अपनी किताब में लिखते हैं कि वहां कुली मजदूर को भी जब तक तुम नर्मी से न पुकारोगे वह तुम्हारी बात का जवाब न देवेगा। बदन

उन लोगों का भरा हुआ, पर मोटे कम, क़द मियाना, रंग ज़रदी मायल, आंखें छोटी चीनियों की तरह, भवें ऊंची, और गरदन तंग, सिर बड़ा, और नाक छोटी और फैली हुई, बाल काले और मोटे तेल से चमकते हुए, डाढ़ी मुंडवाते हैं, हजामत बनवाते हैं, टोपियां सींक की नुकीली जब धूप पानी में बाहर जाते हैं तब पहिनते हैं, घोड़े की लगाम हाथ में लेना बेइज्ज़ती है इसी लिये जब सवार होते हैं लगाम साईसों के हाथ में रहती है। मकान उनके बहुत साफ़ और बड़े क़रीने के साथ, हर चीज़ के वास्ते मुनासिब जगह और हर जगह के वास्ते मुनासिब चीज़, असबाब कम और सफ़ाई अधिक, यह नहीं कि सौदागरी दूकानों की तरह भरे हुए। हम्माम सब मकानों में, बदन साफ़, कपड़ा भी साफ़, वक़्त बटा हुआ, व्यर्थ समय किसी का भी नहीं जाता, पुत्र माता पिता के आज्ञाकारी, जहां लड़के ने होश संभाला और बाप ने उसे अपना घर सौंपा, खुराक उनकी बहुधा चावल, मांस का अहार उनके मत से विरुद्ध है परन्तु खाते हैं, मखन और दूध का मज़ा बिलकुल नहीं जानते, भोजन ये भी चीनियों की तरह सलाइयों से करते हैं, और बरतन उनके बहुत सुन्दर और हलके जप्पानी रोग़न से रंगे रहते हैं। सुबह को जो मुलाक़ाती आता है उसके साम्हने चाय और काग़ज़ के तख्ते पर कुछ मिठाई रखी जाती है, और दस्तूर है कि मिहमान के खाने से जो मिठाई बचे उसे वह उसी काग़ज़ में बांधकर जेब में रख ले जावे। नाम उमर भर में तीन दफ़ा बदलते हैं मुरदों को जलाते और उनके नाम की छतरियां बनाते हैं, जलते समय उनके मित्र और भाई बंधु पुष्प वस्त्र मिठाई इत्यादि चिता में डालते हैं। दर्या की सैर का बड़ा शौक़ रखते हैं, संध्या के समय स्त्री पुरुष सब नाव पर चले जाते हैं शराब पीते हैं

और गाते बजाते हैं, नावें बहुत सुन्दर और और सजीली, रंग बरंग की कंदीलों से रौशन, औरतें वहां की अकसर पतिव्रता, मजलिसों में तीन तीन दफ़ा कपड़ा बदलती हैं, और बीस बीस गौन तक एक पर एक पहिनती हैं,। घड़ी के बदल तोड़े सुलगा रखते हैं, एक एक घंटे में जितना तोड़ा जले उतने तोड़े पर निशान रहता है, और उसी से समय का प्रमाण मालूम करते हैं। मजहब वहांवालों का बौध। भाषा वहां की निराली, एक ही शब्द के ग़रीब अमीर स्त्री और पुरुष के बोलने में जुदा जुदा अर्थ हो जाते हैं। अक्षर भी स्त्री पुरुष के वास्ते जुदा जुदा दो प्रकार के हैं, और लिखने में ये भी चीनियों की तरह खड़ी पंक्ति लिखते हैं, आड़ी नहीं लिखते पाठशाला वहां लड़का लड़की दोनों के वास्ते बने हैं, ग़रीब से ग़रीब जमींदार भी लिख पढ़ सकते हैं, स्त्रियें भी ग्रंथ रचती हैं लोगों को पढ़ने लिखने का शौक़ है, वहां गरमियों के मौसिम में अकसर यह बात देखने में आवेगी कि हर जगह नहर के कनारों पर पेड़ों की घनी घनी ठंढी छाया में औरत और मरद दोनों हाथों में किताब लिये हुए बैठे हैं। कपड़े सूती और रेशमी फ़ौलादी चाक़ू और तलवार और बरतन चीनी के यहां भी अच्छे बनते हैं, और रोग़न तो जपान का सा कहीं भी नहीं होता, यह संदूक क़लमदान इत्यादि जिनको यहां जप्पानी कहते हैं उसी मुल्क से रंग रोग़न होकर आते हैं, वे लोग इस रोग़न को उरुसी के दरख्त से जो उसी मुल्क में होता है पछना लगाकर निकालते हैं। डच लोगों से सीख कर दूरबीन थर्मामेटर इत्यादि यंत्र भी अब बनाने लगे हैं। एक हिकमत वहांवालों को ऐसी आती है कि सिवाय चीनियों के और किसी को भी उस से ख़बर नहीं है, अर्थात् तीन इंच लंबी और एक इंच चौड़ी डिबिया के अन्दर चील और बांस का पेड़ और

आलूचे का दरख्त कलियों समेत दिखला देते हैं। परदेसी आदमियों को ये भी चीनियों की तरह अपने मुल्क में नहीं आने देते। बनज ब्योपार इनका चीन के सिवाय केवल थोड़ा सा और लोगों के साथ है सो भी निगास की इत्यादि उन्हीं बंदरों में जो परदेसियों के वास्ते मुक़र्रर हैं। चीनियों से चावल चीनी हाथीदांत फिटकिरी कपड़ा और फ़रंगिस्तान वालों से विलायती असबाब दवा मसाले शोरा इत्यादि लेते हैं, और तांबा सूखी मछली जप्पानी रोग़न और रोग़नी चीजें उनको देते हैं, बादशाह वहां दो हैं एक दीन का दूसरा दुनियां का दीनी अर्थात् पारलौकिक बादशाह के लिये जागीर मुक़र्रर है, उसी की आमदनी पर गुज़ारा करता है, सल्तनत के काम में दख़ल नहीं देता, केवल जब कोई भारी मुहिम्म आ पड़ती है तो उस से सलाह पूछी जाती है, अथवा जब दूसरा बादशाह कुचाल चलना चाहताहै तो वह उसे ख़बरदार कर देता है, वह पृथ्वी पर पांव नहीं रखता आदमी के कंधों पर चलता है, उसके बाल नींद में काटे जाते हैं, सारे दिन ताज पहिनकर एक आसन से उसे सिंहासन पर बैठे रहना पड़ता है बारह बिवाह करता है, और जो वस्त्र आभूषण बरतन इत्यादि उस के और उसकी स्त्रियों के काम में एक बार आ जाते हैं उन्हें फिर उसी दम तोड़ मरोड़ कर फेंक देते हैं, न वह दूसरी बार उसके काम में आते हैं और न उन को दूसरा आदमी काम में ला सकता है। बाल बच्चे सूबेदारों के राजधानी में रहते हैं, और सूबेदारों को भी बारी बारी से एक साल अपने सूबे में और एक साल राजधानी में रहना पड़ता है। दीवान सूबेदारों का बादशाह के यहांसे मुक़र्रर होता है। पांच सूबेदारों की एक कौंसिल है, यद्यपि उनकी बर्तरफ़ी बहाली का बादशाह को इख़्तियार है पर बिना उनकी सलाह के वह कुछ भी काम

नहीं करसकता, और न उनको बिना क़सूर मौक़ूफ़ कर सकता है, नहीं तो मुल्क में तुरंत बलवा होजावे, यदि कौंसल और बादशाह की राय में कभी कुछ फ़र्क़ पड़े, और बादशाह कौंसल के तजवीज़ी काग़ज़ पर दस्तख़त न करे तो उसका अपील बादशाह के भाई बेटों से तीन शाहज़ादों के साम्हने पेश होता है, पर ऐसा काम बहुत कम पड़ता है, क्योंकि इस अपील में कौंसल की राय ठीक ठहरे तो बादशाह तख़्त से ख़ारिज होजाता है, और जो बादशाह की राय ठीक ठहरे तो फिर वज़ीर समेत सारी कौंसल का पेट चाक होता है। वहां का यह आईन है कि जब तक पुराने पड़ौसियों से नेकमआशी का सार्टीफ़िकट और नये पड़ौसियों से रहने की इजाज़त न मिले कोई आदमी अपने रहने का मकान नहीं बदल सकता। चोरी वहां बहुत कम होती है, सौदागर सोने चांदी से बैल भर कर अकेले चलते हैं। सज़ा अकसर क़तल की, क्योंकि वहांवालों की समझ में क़तल के सिवाय और कोई सज़ा ग़रीब अमीर को बराबर नहीं पहुंच सकती, और इसी लिये वहां जुर्माना कभी नहीं लिया जाता। फ़ौज वहांकी एक लाख पैदल और बीस हज़ार सवार अनुमान करते हैं। आमदनी इस बादशाहत की अठाईस करोड़ रुपया साल है। दारुस्सल्तनत जेडो में जो ३६ अंश उत्तर अक्षांस और ४० अंश पूर्व देशांतर में २२ मील लंबा बसा है पंदरह लाख आदमी की बस्ती बतलाते हैं। मकान अकसर लकड़ी और बांस के, नदी और नहरें शहर के बीच से बहती हैं, दुतरफ़ा उनपर सुंदर दरख़्त लगे हुये और जगह जगह पर पुल बने हुये। बादशाह का महल शहर के अंदर आठ मील के घेरे में बना है, दीवानआम ६०० फ़ुट लंबा ३०० फ़ुट चौड़ा बिलकुल देवदारकी लकड़ी का बना

है, और उसपर निहायत उमद: जप्पानी रंग रौग़न किया है ॥

——※——

एशियाईरूस

एशियाई इस वास्ते कहते हैं कि रूस का मुल्क कुछ तो एशिया में पड़ा है और कुछ यूरुप अर्थात् फ़रंगिस्तान में गिना जाता है, इस लिये एशियाई का बयान जो एशिया में पड़ा है एशिया के साथ और यूरुपी अर्थात् फ़रंगिस्तान के रूस का बर्णन जो यूरुप में गिना जाता है फ़रंगिस्तान के साथ किया जावेगा, बरन इस बादशाह का जियाद: बयान फ़रंगिस्तान ही के साथ होवेगा, क्योंकि राजधानी इसकी पीटर्सबर्ग फ़रंगिस्तान में बसी है । जानना चाहिये कि एशिया रूस, जो सिवाय ककेसस के कोहिस्तानी जिलों के ४८ से ७८ अंश उत्तर अक्षांस तक और ५९ अंश पूर्ब देशांतर से १७० अंश पश्चिम देशांतर तक चलागया है, उत्तर तरफ़ उत्तर समुद्र से, और दक्षिण तरफ़ चीन तूरान ईरान और एशियाईरूमसे, पूर्ब और पासिफ़िक समुद्र से, और पश्चिम फ़रंगिस्तानीरूस से घिरा हुआ है। वह पश्चिम से पूर्ब को ५००० मील लंबा और उत्तर से दक्षिण को १५०० मील चौड़ा होवेगा । बिस्तार तीस लाख मील मुरब्बा, और आबादी फ़ी मील एक आदमी अर्थात् कुल तीस लाख आदमी की, और १७ सूबों में बांटा गयाहै, और साईबीरिया इस्तराखान और ककेसस के कोहिस्तानी ज़िले ये तीन उसके बड़े हिस्से हैं । साईबीरिया यूरल पहाड़ से पासिफ़िक समुद्र तक चला गया है, उस के नैर्ऋतकोन डन और वलगा नदी और कास्पियनसी के बीच इस्तराखान, उसके नैर्ऋतकोन कास्पियनसी और ब्लाकसी के बीच ककेसस के कोहिस्तानी ज़िले हैं । जंगल उजाड़ बहुत है । दक्षिण

उत्तर ध्रुव
ची न
५०
६०
७०
८०
९०
१००
११०
१२०
१३०
१४०
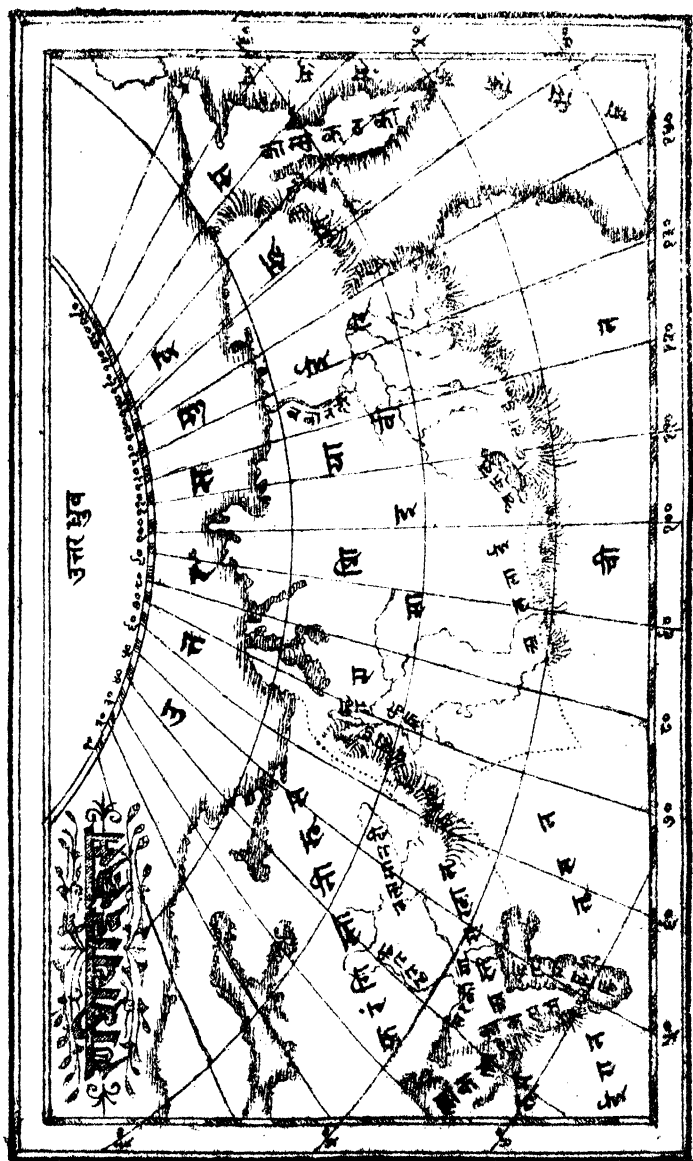
भाग में धरती उपजाऊ है, और घोड़े और मवेशी भी बहुतायत से होते हैं, परन्तु उत्तर भाग में केवल झील और दलदल और बर्फ़िस्तान है। पहाड़ों के दर्मियान इस मुल्क में अलताई और यूरल और ककेसस की श्रेणियां प्रसिद्ध हैं, इसी ककेसस को फ़ारसी में कोहक़ाफ़ कहते हैं, और इसी ककेसस के घाटे को बंद करने के लिये जिस में रूसवाले ईरान पर हमला न कर सकें सिकन्दर ने वह बड़ी दीवार बनाई थी जिसे फ़ारसी किताबों में सद्दे इस्कंदरी लिखा है, उसका अलबुर्ज नामी एक शिखर प्राय १८००० फ़ुट समुद्र से ऊंचा है। अलताई इस मुल्क को तातार से और यूरल उसे फ़रंगिस्तान से जुदा करता है। सब में बड़ी नदी इस मुल्क में ओबी है, वह २५५० मील लंबी होवेगी। लेना दो हज़ार मील लंबी है, दोनों अलताई से निकलकर उत्तर समुद्र में गिरती हैं, और वलगा इस मुल्क को फ़रंगिस्तानी रूस से जुदा करती हुई कास्पियनसी में गिरती है। झील बेकल की ३५० मील लंबी और ५० मील तक चौड़ी है, नवम्बर से मई तक सर्दी के सबब जमी रहती है। खान से वहां सोना चांदी प्लाटिनम् तांबा लोहा सीसा सुरमा पारा शोरा गन्धक फिटकरी हीरा लसनिया पुखराज इत्यादि बड़ी बड़ी क़ीमती चीज़ें निकलती हैं, लोहा बहुत है, पहाड़ के पहाड़ लोहे के चुंबक का स्वभाव रखते हैं! साईबीरिया का इलाक़ा रूस के मुल्क का कालापानी है, जो कोई संगीन मुजरिम या राजद्रोही होता है उसको साईबीरिया में ले जाकर वहां उससे खान खोदने का काम लेते हैं। साईबीरिया के अग्निकोन की तरफ़ कम्सकट्का का प्रायद्वीप प्राय ६०० मील लंबा है और उस में कई एक ज्वालामुखी पहाड़ भी हैं, दूसरे तीसरे साल जब वे अपने जोर पर आते हैं तो सैकड़ों हाथ ऊंची ज्वाला

उठती है, गली हुई धातुकी नदियां जारी होजाती हैं, और उनके अन्दर से इतनी राख निकलती है कि तीस तीस मील तक छाजाती है। वहां लकड़ी अच्छी होती है, परन्तु सर्दी की शिद्दत से खेती बारी नहीं होसकती। वहां के आदमी शिकार मारकर अथवा दरख़्तों की छाल जंगली फलों के साथ मिलाकर अपना पेट भरते हैं, और नाव की तरह बिना पहिये की गाड़ी बनाकर और उस में कुत्ते जोतकर बर्फ़िस्तान पर चलते हैं। इन कुत्तों का अजब स्वभाव है, गरमी के मौसिम में तो वहां के आदमी उन को जंगलों में छोड़ देते हैं, वहां वे अपनी ख़ुराक आप तलाश करलेते हैं, और फिर जाड़े के आरंभ में ख़ुद बख़ुद जंगलों से लौटकर अपने अपने मालिकों के पास चले आते हैं। सितम्बर से मई तक वहां जाड़े का मौसिम रहता है। समूर क़ाक़ुम और संजाब इत्यादि पोस्तीन बहुत उमद: होते हैं, और उन को बेचकर वहां के लोग बड़ा फ़ाइदा उठाते हैं। जंगलों के दर्मियान हिरन की क़िस्म से एक तरह के बारहसिंह के भी बहुत होते हैं, और उत्तर के इलाक़ों में लोग उनको मवेशी के तौर पर पालते हैं। आदमी इस मुल्क में रूसी क़ज़ाक़ और तातारी बहुत क़िस्म के बसते हैं, और वे लोग बड़े बीर और साहसी और पराक्रमवाले होते हैं। घोड़े की सवारी और बाज़ के शिकार से बड़ा शौक़ रखते हैं, बहुतेरे उनमें क्रिस्तान हैं, और बहुतेरे मुसल्मान और बुतपरस्त। सर्केशिया की स्त्रियों का रूप सारी दुनियां में मशहूर है। उत्तर भाग में समुद्र के तटस्थ लोग नाटे, मज़बूत, गर्दन उन की तंग, सिर बड़ा, मुंह चक़ला, आंखें काली, पेशानी चौड़ी नाक चिपटी, मुंह लंबा, होठ पतले, रंग गेहुआं, बाल कड़े और काले कंधों पर लटकते हुए, डाढ़ी बहुत कम, और पैर छोटे होते हैं। जल के जीव मार

कर पेट भरते हैं, और वस्त्र की जगह चमड़े पहनते हैं। जाड़ों के मौसिम में जब वहां महीनों की लंबी रातें होती हैं (१) तो ये लोग बर्फ़ में गढ़ा खोदकर और उसके ऊपर बर्फ़ के ढोकों से कुटी सी बना कर उसी के अंदर चुप चाप बैठ रहते हैं, और घास फूस और मछली की चरबी जलाकर उसी की आग तापा करते हैं। इस शिद्दत से सर्दी पड़ती है कि आग जलने पर भी वे बर्फ़ के मकान कदापि नहीं गलते, और जो लोग उसके अंदर रहते हैं। उन को बखूबी हवा की सख्ती से बचाते हैं। सूरत इन बर्फ़ी कुटियों की औंधी हुई नांद की तरह, धूआं निकलने के लिये ऊपर एक छेद रहता है। साईबीरिया का इलाक़ा पहले तातार के शामिल था, सोलहवें शतक में रूस के शहंशाह ने उसको फ़तह करके अपने मुल्क में मिला लिया, जार्जिया इत्यादि इलाक़े भी उसने थोड़े ही दिनों से अपने क़बज़े में किये हैं। जार्जिया के इलाक़े में कास्पियनसी के पश्चिम कनारे दरख्त और पानी से खाली एक पटपर में बाकू का शहर बसा है, वहां की सारी धरती नफ्त अर्थात् मटियेतेल से तरह है, और जहां कहीं छेद या दरार है उसके अंदर से उसी प्रकार की गैस अर्थात् प्रज्वलित वायु निकलती है जैसी यहां कांगड़े के पास ज्वालामुखी से निकलती है, और जिससे रात्रि के समय कलकत्ते का सारा शहर रोशन रहता है। बाकू के भी लोग इस गैस को नलों की राह अपने मकानों में लेजाकर चराग़ की एवज़ उसी से काम करते हैं, अर्थात् जहां कहीं वह गैस ज़मीन से निकलती है वहां से अपने मकान तक एक नल लगा देते

---

(१) ध्रुव के समीप महीनों की लंबी रात होने का कारण इस ग्रंथ के अंत में वर्णन होगा॥

हैं उसी नलकी राह धूएं की तरह वह गैस उनके मकान में आ निकलती है, बरन वहां के आदमी अपना खाना भी उसी गैस से पकाते हैं। शहर के पास उस स्थान पर जहां से वह गैस बहुतायत के साथ निकलती है चार नल बहुत बड़े बड़े आतिशदानों के दूदकश की तरह खड़े लगा रखे हैं, उन नलों के अंदर से उस प्रज्वलित वायु की लाटें बड़ी भभक और तेज़ी के साथ दूर तक ऊंची निकलती हैं, उसके चौफेर आध कोस के घेरे में सफ़ेद पत्थरों की ऊंची दीवारें खिची हैं, और उन दीवारों में अन्दर की तरफ़ बहुत सी कोठरियां बनी हैं, और उन कोठरियों के अन्दर कितने ही हिंदू फ़क़ीर जोगी और जटाधारी बैठे रहते हैं, वे अपना खाना अपने हाथ से पकाते हैं दूसरे का छूआ नहीं खाते, जब मरते हैं तो उनको घी से नहलाकर एक कुंड के अंदर जो इसी काम के लिये बना रखा है उसी गैस से जलादेते हैं। जिन दिनों में उस मुल्क के आदमी अग्निहोत्री थे, और गब्र कहलाते थे, उसी समय का यह मंदिर बनाहै। अब भी जो वहां इस मत के आदमी बच रहे हैं उनकी मदद से उसका खर्च चलता है। हिंदू लोग बाकू को महा ज्वालामुखी कहते हैं। नदियों के मुहानों में जो उत्तर हिम समुद्र में गिरती हैं अकसर करारों के टूटने पर अथवा बर्फ़ के गलने पर धरती के अंदर एक प्रकार के हाथियों के दांत बहुतायत से मिलते हैं, बरन सन् १८०३ में बर्फ़ के करारे के नीचे से एक समूची लाश निकली थी, नौ फ़ुट चार इंच ऊंची, १६ फ़ुट ४ इंच लंबी, दांत भैंस की सींगों की तरह घूमे हुए, नौ फ़ुट छ इंच लंबे, और साढ़े चार मन भारी, चमड़ा गहरा ऊदे रंग का ज़रा ज़रा लाली झलकती हुई, बदन पर उसके ऊन की तरह काले काले बाल थे। वहांवाले इन दांतों को सौदागरों के हाथ बेचते हैं, और उस जानवर

का नाम मेमाथ पुकारते हैं। निदान वहां इस जानवर के दांत और हाड्डी मिलते हैं, जीता हुआ जानवर अब दुनियां भर में कहीं नहीं है, अर्थात् हाथी तो अवश्य होते हैं, परंतु उस प्रकारका हाथी जिस के वहां दांत मिलते हैं कहीं भी देखने में नहीं आता, और अत्यंत अद्भुत आश्चर्य यह है कि जहां वे दांत मिलते हैं वह तो केवल बर्फ़िस्तान है, जंगल और चारा बिलकुल नहीं, जो एक हाथी भी वहां ले जाकर छोड़ो मारे सर्दी और भूख के जल्द ही मरजावेगा, यह हज़ारों मेमाथ क्योंकर जीते थे और क्या खाते थे? अक्सर विद्यावानों का यह निश्चय है कि पुराने समय में वह मुल्क गर्मसेर और जंगलों से परिपूर्ण था, काल पाके हवा की तासीर बदल गई और अब सर्दी पड़ने लगी, इस बात के साबित करने के लिये बड़ी बड़ी युक्तियां लाते हैं, जो हो ईश्वर की महिमा अपार, इसका अंत कोई नहीं पा सकता, देखो हज़ारों बरस के पुराने जानवरों की लाशें अद्यावधि बर्फ़ के तले से निकलती हैं। शराब मेवा क़हवा अन्न कपड़ा दवा मोती इत्यादि वहां दिसावरों से आता है, और नमक चाय रेशम चमड़ा चरबी जवाहिर मुश्क, समूर संजाब क़ाकुम इत्यादि वहां से दिसावरों को जाता है॥

---*---

अफ़ग़ानिस्तान

यह मुल्क हिन्दुस्तान और ईरान के बीच में २५ अंश से ३७ अंश उत्तर अक्षांस तक और ५८ अंश से ७२ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। दक्षिण तरफ़ समुद्र, उत्तर तरफ़ तूरान, पूर्व तरफ़ हिन्दुस्तान, और पश्चिम तरफ़ ईरान उसकी सीमा है। नौ सौ मील पूर्व से पश्चिम को लंबा और प्राय आठ सौ मील उत्तर से दक्षिण

को चौड़ा होवेगा। विस्तार चार लाख चौरानवे हजार मील मुरब्बा है, और आबादी फी मील मुरब्बा २८ आदमी की, अर्थात् एक करोड़ चालीस लाख आदमी उस में बसते हैं। इस मुल्क के तीन बड़े हिस्से हैं, उत्तर असली अफ़ग़ानिस्तान, दक्षिण बलूचिस्तान, और पश्चिम हिरात अथवा खुरासान। यद्यपि यह तमाम मुल्क अफ़ग़ानिस्तान अथवा काबुल की सल्तनत कहलाता है, परंतु इन दिनों में वहां ज़िले ज़िले के हाकिम जुदा जुदा बन बैठे हैं सिर्फ़ नाममात्र को काबुल के अमीर के आधीन हैं, तिस में हिरात वाला तो अब जुदाही बादशाह कहलाता है। इस मुल्क में पहाड़ और जंगल बहुत हैं, परन्तु जो धरती पानी से तरहै वह अत्यन्त उपजाऊ और उर्वरा है। हिमालय की श्रेणी जो सिन्धु के दहने कनारे इस मुल्क के उत्तर भाग में पड़ी है उसे वहांवाले हिन्दूकुश कहते हैं, कई चोटियां उसकी समुद्र से बीस बीस हजार फ़ुट तक ऊंची हैं, पेड़ उस पर बहुत कम और छोटे छोटे। बलूचिस्तान में रेगिस्तान का बड़ा जंगल ३०० मील लम्बा और २०० मील चौड़ा होवेगा। नदियां हीरमन्द और फ़रह दोनों ज़रह की झील में जो सीस्तान के दर्मियान प्राय १०० मील लम्बी होवेगी गिरती हैं, हीरमन्द ६५० मील से अधिक लम्बी है। मेवे काबुल के मशहूर हैं, तिस में भी सेब नाशपाती खूबानी अनार अंजीर सर्दे और अंगूर तो बहुत ही उमदः होते हैं। अनाज में जौ गेहूं चावल इत्यादि और दरख्तों में चील केलो देवदार बान सर्व अखरोट ज़ैतून भोज तूत बेदमजनू इत्यादि बहुत होते हैं। बलूचिस्तान और हिरात के पहाड़ों में हींग के पेड़ जंगलों में पैदा होते हैं, और वहां के आदमी उनकी तरकारी बनाते हैं। शहतूत इस मुल्क में बहुत होता है, यहां तक कि कंगाल आदमी

उसी के आटे की रोटियां पकाते हैं। सोना चांदी लसनिया माणक लाजवर्द सीसा लोहा सुर्मा गंधक हरिताल फिटकिरी नमक और शोरा खान से निकलता है। कुत्ते शिकारी इस मुल्क में अच्छे होते हैं, और बिल्ली भी लम्बे बालोंवाली वहां की बहुत खूबसूरत है। दुम्बे की दुम वहां सात सेर तक भारी होती है, और बिलकुल चरबी से भरी हुई। जंगल में शेर भेड़िये लकड़बघे लोमड़ी खर्गोश रीछ हिरन बन्दर सूवर साही के सिवा भेड़ी बकरी और कुत्ते भी रहते हैं। ऊंट और बैल वहां बड़ा काम देते हैं। और घोड़े तो उधर के प्रसिद्धही हैं। चिड़ियों में उक़ाव बाज बगला सारस तीतर कबूतर बतक मुर्गाबियां इत्यादि सब होती हैं। सांप और बिच्छू बड़े होते हैं, पर नदियों में मगर और घड़ियाल नहीं हैं, और मछलियां भी थोड़ीही क़िस्म की होती हैं। गर्मी सर्दी उस मुल्क में बलन्दी और पस्ती पर मुनहसर है, अर्थात् कोहिस्तान और ऊंची जगहों में तो बर्फ़ और निहायत सर्दी, और रेगिस्तान और नीची जगहों में शिद्दत से गर्मी रहती है। बरसात वहां नहीं होती। सराब अर्थात् मृगतृष्णा इस मुल्क में अंजान आदमी के लिये बड़े धोखा खाने की जगह है, दूरतक ज़मीन पर पानीही पानी नज़र पड़ता है, वरन जिस तरह सच्चे पानी में तटस्थ चीज़ों की आभा पड़ती है उसी तरह उस में भी आसपास के दरख्त जानवर इत्यादि झलकते हैं, और समूम ऐसी एक प्रकार की गर्म हवा गर्मी के दर्मियान वहां के रेगिस्तानों में चलती है कि जो कदाचित आदमी के बदन में लगे वह एक दम में झुलस कर बेदम हो जावे। आदमी इस मुल्क के सुन्नी मुसल्मान हैं, हिन्दू भी थोड़े बहुत वहां बसते हैं। अफ़ग़ानी यद्यपि अक्सर दुबले होते हैं, परन्तु मज़बूत और मिहनती और गठीले और नाक उनकी ऊंची

और चिहरे लंबूतरे। ये लोग दिलमें लाग लालच डाह हठ साहस और स्वच्छन्दता बहुत रखते हैं। बलूची जन्म के लुटेरे हैं, अक्सर कम्बल के तंबू तानकर मैदानों में पड़े रहते हैं, और क़ाफ़िलों पर छापा मारते हैं। ज़ुबान अफ़ग़ानिस्तान में कई बोली जाती हैं, दस से कम नहीं हैं, परन्तु पशतो बहुत जारी है। बलूचिस्तान में तिजारत और सौदागरी बहुत कम है, निकास तो कुछ भी नहीं होता। अफ़ग़ानिस्तान से ऊन रेशम हिराती क़ालीन तर व खुश्क मेवा हींग मजीठ तंबाकू घोड़ा खच्चर फिटकरी गंधक सीसा जसता इत्यादि चीज़ों का निकास होता है, और विलायती हथियार कपड़ा शीशे चीनी का बरतन पशमीना नील दवा चमड़ा काग़ज़ हाथीदांत जवाहिर सोना चाय इत्यादि वहां बाहर से आता है। साबिक़ ज़माने में यह मुल्क भारतवर्षीय राजाओं के आधीन था, सिकन्दर के समय में यूनानी सूबेदारों के तहत रहा, फिर धीरे धीरे ईरान के बादशाहों के क़बज़े में आया और ईरान के साथ वह भी ख़लीफ़ाओं की सल्तनत में शामिल हुआ। सन् ८६२ में जब इस्माईलसामानी ख़लीफ़ा के हुक्म से निकलकर बुखारे का स्वाधीन बादशाह हुआ, तो उस ने इस मुल्क पर अपना क़बज़ा रखा, अलपतगीं इस मुल्क का पहला स्वाधीन बादशाह हुआ और उसके बेटे के मरने के बाद सबुकतगीं ने ग़ज़नी को उस मुल्क की दारुस्सल्तनत मुकर्रर किया, उसका बेटा महमूद ऐसा बड़ा और नामी बादशाह हुआ कि न उस मुल्क में पहले कभी हुआ था और न उसके पीछे आज तक हुआ है। सन् ११८९ में यह सल्तनत ग़ोरियों के घराने में आई, और ग़ोरियों का घराना नाश होने पर थोड़े थोड़े दिनों तातार मुग़ल और ईरानियों के हाथ में रही, यहां तक कि ईरान के बादशाह नादिरशाह के मारे जाने पर

अहमदशाह दुर्रानी अफ़ग़ानिस्तान का स्वाधीन बादशाह हो बैठा, और बरन लाहौर मुल्तान इत्यादि हिन्दुस्तान का भी कोना दबाया। सन् १८०९ में दोस्तमहम्मद बारकजई ने उसके पोते शाहशुजा और महमूद को तख्त से खारिज करके ताज बादशाही का अपने सिर पर रखा, और रूसियों से मिलकर हिन्दुस्तान की हद पर फ़साद उठाना चाहा, तब नाचार शाहशुजा उस मुल्क के असली मालिक को जिसने सरकार से मदद चाही थी तख्त पर बिठाने और दोस्तमहम्मद खां को वहां से निकालने के लिये सन् १८३९ में उस मुल्क के दरमियान अंगरेज़ी फ़ौज गई लेकिन १८४१ में मुल्कियोंने दोस्तमहम्मद के बेटे अकबरखां की बहकावट से बड़ा बलवा किया, सरअलकजंडरबर्निस साहिब और सरविलियम मिकनाटन साहिब दोनों मारे गये, और फ़ौज भी सरकारी, चार हज़ार जंगी सिपाही अनुमान बारह हज़ार आदमियों की बहीर के साथ, इस अकबरखां की दग़ाबाज़ी और फ़रेब और बर्फ़ की सख्ती से बिलकुल ग़ारत हुई, केवल जनरल सेल साहिब उसके मकर के जाल में न आये, और जलालाबाद के क़िले पर क़ाबिज़ बने रहे। यद्यपि सन् १८४२ में सरकारी फ़ौज ने फिर उस मुल्क में जाकर क़बज़ा किया, परन्तु जो कि शाहशुजाउल मुल्क भी उस बलवे में मारा गया था, और उसके बेटे सल्तनत की लियाक़त न रखते थे, और सरकार को वह मुल्क अपने दखलमें रखना मंजूर न था, निदान सरकारी फ़ौज उस मुल्क को छोड़कर लौट आई, और दोस्तमहम्मद को भी जो क़ैद में था छोड़ दिया, अब वह उस मुल्क की बादशाहत करता है। आईन क़ानून वहां मुसलमानों की शरा अर्थात् उनके धर्मशास्त्र बमूजिब चलता है। आमदनी कुछ न्यूनाधिक सत्तावन लाख रुपया साल है, इस

में चौंतीस लाख तो काबुल कंधार अर्थात् असली अफ़ग़ानिस्तान की, और बीस लाख नक़द और जिस मिलाकर हिरात की बलूचिस्तान कुल तीन लाख का मुल्क है। राजधानी काबुल ३४ अंश १० कला उत्तर अक्षांस और ६९ अंश १५ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से कुछ कम साढ़े छ हज़ार फुट ऊंचा कामा नदी के दोनों तरफ़ सुंदर मेवों के बाग़ और फूलों के जंगल के दरमियान तीन मील के घेरे में अनुमान साठ हज़ार आदमियों की बस्ती है। नैर्ऋतकोन को एक छोटे से पहाड़ पर बालाहिसार का क़िला बना है, और दक्षिण तरफ़ अकबर के दादा बाबरबादशाह की क़बर है। काबुल से ४० मील उत्तर ४०० फुट ऊंचे एक पहाड़ की अलंग में २५० गज़ ऊंचा और १०० गज़ चौड़ा बालू का ढेर पड़ा है, जब कभी उस पर आदमी चढ़ता है अथवा हवा जोर से लगती है, तो उस बालू के अंदर से नक़ारे और नफ़ीरी की आवाज़ निकलती है (१) वहांवाले उसको रेगरवां कहते हैं, और उसके पास एक गुफ़ा है उसे इमाम मिहदी का मकान बतलाते हैं। ग़ज़नी अथवा ज़ाबुल काबुल से ७० मील दक्षिण समुद्र से पोने आठ हज़ार फुट ऊंचा सवा मील के घेरे में खंदक़ और पक्की शहर पनाह के अंदर दस हज़ार आदमियों की वस्ती है, शहर के उत्तर भाग में क़िला है,

---

(१) कारण इसका जो एशियाटिक जर्नल में लिखा है, वह बिना इलमी किताबों के पढ़े लोगों की समझ में न आवेगा, इसलिये तरजुमा न करके जों का तों अंगरेजी में लिख देते हैं॥

"Cause—re-duplication of impulse setting air in vibration in a course of echo,"

पुराना शहर तीन मील के तफ़ावत पर ईशान कोन को बसा था, सन् ११५१ में अलाउद्दीनगोरी ने उसे ग़ारत किया, जो लोग उस में नामवर और दर्जेवाले थे उन्हें वहां क़तल न करके जीता ग़ोर में जो हिरात से १२० मील अग्निकोन को है पकड़ लेगया, और फिर छुरों से ज़िबह करके उनके लहू से अपने क़िले और मकान का गारा सनवाया। अब इस पुरानी ग़ज़नी में जिसे महमूद ने हिन्दुस्तान उजाड़कर बसाया था महमूदशाह के मक़बरे के सिवाय केवल दो मीनार सौ सौ फ़ुट ऊंचे बाक़ी रह गये हैं। चंदन के किवाड़ों की जोड़ी अठारह फ़ुट ऊंची, जो महमूदशाह सोमनाथ के फाटक से उखाड़ लेगया था, इसी मक़बरे में लगी थी, अंगरेज़ी फ़ौज अपनी बांह का बल जताने के लिये काबुल से लोटते समय उसे फिर हिन्दुस्तान को ले आई, अब वह आगरे के क़िले में रखी है। क़ंधार अथवा गंधार काबुल से प्राय २०० मील नैर्ऋत कोन को समुद्र से साढ़े तीन हज़ार फ़ुट बलंद तीन मील के घेरे में खाई और कच्चा शहर पनाह के अन्दर अनुमान पचास हज़ार आदमियों की बस्ती है। चौक जिसे वहांवाले चारसू कहते हैं पचास गज़ चौड़ा गुम्बज़ से पटा है। हिरात काबुल से कुछ कम ५०० मील पश्चिम खाई और कच्ची शहर पनाह के अंदर ४५००० आदमियों की बस्ती है। निहायत ग़लीज़ गलियां तंग बाज़ार मिहराबी छत से पटा हुआ चौक गुम्बज़ के तले। काबुल से पश्चिम वायुकोन को झुकता अफ़ग़ानिस्तान की उत्तर हद पर तुरकिस्तान की राह में समुद्र से साढ़े आठ हज़ार फ़ुट ऊंचे हिंदूकुश के घाटे पर बामियान के पास बहुत से पुरानी इमारतों के निशान हैं, दो खड़ी मूर्ति कपड़े समेत एक १८० और दूसरी ११७ फ़ुट ऊंची पहाड़ में तराशी हैं। वहां

वाले उनको संगसाल और शाहमम्मा कहते हैं। पास ही उस पहाड़ में बड़ी बड़ी गुफा भी काट कर बनाई हैं। सिवाय इसके उस मुल्क में जो सब देहगोप और पुराने सिक्के मिलते हैं, उन से यह बात प्रत्यक्ष प्रकट है, कि मुसल्मानों का दीन फैलने से पहले वहांवाले भी हिंदुस्तानियों की तरह बुध और बेद को मानते थे, अब भी उन पहाड़ों में एक क़ौम सियाहपोशों की बसती है, मुसल्मान उनको काफ़िर पुकारते हैं, और वे मुसल्मानों के मारने में बड़ा पुण्य समझते हैं, स्त्रियां उन की अति रूपवान होती हैं, परन्तु आचार और व्यवहार उनके कुछ अद्भुत से हैं, न इस समय के हिंदुओं से मिलते न मुसल्मानों से न बौधों से न क्रिस्तानों से। क़िलआत बलूचिस्तान के ख़ां के रहने की जगह काबुल से ४२५ मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता समुद्र से ६००० फ़ुट ऊंचा एक पहाड़ के कनारे पर कच्ची शहरपनाह के अंदर बसा है। पश्चिम तरफ़ क़िला है। आबादी गिर्दनवाह की भी मिलाकर १२००० से अधिक नहीं है। क़िलआत से अनुमान २५० मील के लगभग दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता और जहां हिंगुल नदी का समुद्र से संगम हुआ है उससे २० मील ऊपर उसी नदी के कनारे दो पहाड़ों के बीच एक गुफा सी है, उसी के ऊपर हिंगलाज देवी का छोटा सा कच्चा मंदिर बना है, मूर्ति नहीं है, केवल पिंडी की पूजा होती है। यह स्थान हिन्दुओं का बहुत प्रसिद्ध तीर्थ है। हमको उसका शुद्ध नाम हिंगला मालूम होता है, क्योंकि हिंगलाज शब्द किसी ग्रंथ में नहीं मिलता, और हिंगुला चूडामणि तंत्र में उस पीठ का नाम लिखा है जहां शक्तिमतवालों के निश्चय बमूजिब देवी का ब्रह्मरंध्र गिरा बतलाते हैं। हिन्दुस्तान के जो यात्री वहां जाते हैं उनको करांची बंदर से दस मंज़िल पड़ता है॥

अथवा तुर्किस्तान, जिसे अंगरेज़ लोग इंडिपेंडंटटार्टरी अथवा स्वाधीन तातार भी कहते हैं, ३९ अंश से ५१ अंश उत्तर अक्षांस तक और ५२ अंश से ७४ अंश पूर्व देशान्तर तक चला गया है। पश्चिम तरफ़ उस के कास्पियनसी अथवा बहरे ख़िज़्र नाम एक झील पड़ी है, अंगरेज़ लोग इस कास्पियन को सी और मुसल्मान बहर अर्थात् समुद्र बहुत बड़ा और खारा होने के कारन कहते हैं, परन्तु वस्तुत: वह झील ही है, क्योंकि उसका जल चारों तरफ थलसे घिर रहा है। निदान कास्पियन दुनियां में सब से बड़ी झील है, अढ़ाई सौ मील चौड़ी और साढ़े छ सौ मील लंबी होवेगी। अलताई के पहाड़ की श्रेणी तूरानको उत्तर तरफ़ रूस के मुल्क से, और बिलूरताग़ के पहाड़ उसको पूर्व तरफ़ चीनी तातार से, और हिंदूकुश के पहाड़ उसको दक्षिण तरफ़ अफ़ग़ानिस्तान से जुदा करते हैं। ये सब पहाड़ एक दूसरे से जुड़े और हिमालय से मिले हुये हैं, मानों उसी की वे सब शाखा हैं। दक्षिण के रुख उसकी सर्हद जैहूंपार बराबर कास्पियन तक ईरान से मिली है। यह मुल्क पूर्व से पश्चिम को १५०० मील लंबा और उत्तर से दक्षिण को ११०० मील चौड़ा है। बिस्तार दश लाख मील मुरब्बा। आबादी पांच आदमी फ़ी मील के हिसाब से ५०००००० । उत्तर तरफ़ इस मुल्क में बड़े बड़े रेगिस्तान पड़े हैं, कि जिन में कहीं एक पत्ता घास का भी नहीं जमता। नदियां जैहूं और सैहूं प्रख्यात हैं, जैहूं जिसे अंगरेज़ी में आक्सस और संस्कृत में चक्षुस् कहते हैं १३०० मील, और सैहूं ९०० बहती हैं। झील अराल की जिसे बहरेख़ारज़म भी कहते हैं २५० मील लम्बी और ७० मील चौड़ी है, पर पानी उसका खारा है, जैहूं और सैहूं दोनों बिलूरताग़ पहाड़ से निकलकर इसी झील में गिरती हैं। पैदाइश

वहां की आसपास के मुल्कों से बहुत मिलती हैं। खान से लसनिया सोना चांदी पारा तांबा और लोहा निकलता है। बदख़्शां का इलाक़ा इस मुल्क के अग्निकोन में हिन्दूकुश के उत्तर लाल पैदा होने के वास्ते बहुत मशहूर है। जाड़ों में सर्दी शिद्दत से पड़ती है, पर तौभी आबहवा उस मुल्क की अच्छी है। तातारियों में चरवाहों की क़ौम के बहुत हैं, अक्सर आदमी केवल मवेशी पालकर अपना गुज़ारा करते हैं, और जहां चराई और पानी का आराम देखते हैं, उसी जगह अपने डेरे जा गाड़ते हैं, जो लोग शहर और गांव में बस्ते हैं वे बनज व्यौपार और खेती बारी भी करते हैं। आदमी वहां के सुन्नी मुसल्मान हैं, और बादशाह वहां का अमीरुल्मोमीनन कहलाता है। मुनशी मोहनलाल, जो सरअलकजंडरबर्निस-साहिब के साथ बुख़ारा गया था, अपनी किताब में लिखता है कि वहां का बादशाह क़ुरान के हुक्म बमूजिब न तो ज़र जवाहिर पहनता है और न सोने चांदी के बरतन काम में लाता है, एक रोज़ जब वह बाग़ को गया तो मुनशीसाहिब ने उसकी सवारी देखी थी, अच्छे खासे मौलवियों की तरह सादी पोशाक पहने घोड़े पर चला जाता था, दस पंदरह सवार साथ थे और खच्चरों पर तांबे के देग देगचे रकाब लोटे इत्यादि क़लई किये खाने के बरतन लदे थे। ये लोग डाढ़ी रखते हैं, और आंख की पुतलियां और बाल उनके काले होते हैं। फ़ौज यहां के बादशाह की २५००० । आमदनी अढ़तालीस लाख रुपये साल की। बुख़ारा उसकी दारुस्सलतनत सुग़द नदी के दोनों किनारों पर बसा है, वह बड़ी तिजारत की जगह है, वहां चीन हिन्दुस्तान रूस फ़रंगिस्तान सब जगह की चीज़ें आती हैं, बस्ती उस में प्राय डेढ़ लाख आदमियों की अनुमान करते हैं।

मसजिदें शहर में ३६० से कम नहीं, और मदरसे अर्थात् पाठशाला इस से भी अधिक हैं। वहां के बाजार में बर्फ़ और चाय की दूकानें बहुत हैं, वहां के आदमी चाय बहुत पीते हैं। हिन्दुओं को हुक्म है कि अपनी टोपियों पर निशान रखें, जिस में मुसल्मान कभी धोखे से सलामअलैक न कहें, वे लोग सिर्फ़ नाम के हिन्दू हैं, आचार उनके बिलकुल भ्रष्ट। बलख् बुख़ारा से २५० मील अग्निकोन दक्षिण को झुकता बहुत पुराना शहर है, ज़र्दश्त जिसने पार्सियों का मत चलाया था इसी शहर के दर्मियान पैदा हुआ था, अब थोड़े दिनों से वह काबुलवालों के दख़ल में जा रहा है। समर्कंद बुख़ारा से १५० मील पूर्व सुंदर सजल मेवों के दरख़्तों के दर्मियान कच्ची शहरपनाह के अंदर बसा है, वह तैमूरशाह की दारुस्सलतनत था कि जिसकी औलाद अबतक दिल्ली के तख़्त पर थी। यद्यपि यह सारा मुल्क बुखारा की सल्तनत में गिना जाता है, लेकिन उसके दर्मियान ख़ीवा अथवा ख़ारज़म वायुकोन को, खोकन्द अथवा कोकन ईशानकोन को, कुन्दुज़ अग्निकोन को, इन तीनों इलाक़ों के ख़ा अर्थात् हाकिम केवल नाम मात्र को बुख़ारा के आधीन हैं॥

ईरान

२५ अंश से ४० अंश उत्तर अक्षांस तक और ४४ अंश से ६५ अंश पूर्व देशांतर तक। उत्तर रूस और तूरान और कास्पियानसी है, दक्षिण ईरान की खाड़ी जिसे वहांवाले दर्याय उम्म पुकारते हैं, पूर्व अफ़ग़ानिस्तान, और पश्चिम तरफ़ एशियाई रूम से जा मिला है। प्राय ९०० मील पूर्व से पश्चिम को लंबा और छ सौ मील उत्तर से दक्षिण को चौड़ा है। विस्तार ५६०००८ मील मुरब्बा।

आबादी फ़ी मील मुरब्बा १८ आदमी के हिसाब से एक करोड़ आदमी की अनुमान करते हैं। नीचे इस मुल्क के सूबों के साम्हने उनके बड़े शहरों का नाम लिखते हैं।

नम्बर	नाम सूबों का	नाम शहर का
१	आज़रबायजान वायुकोन की तरफ़ रूम और रूस की हद पर	तबरेज़
२	गुर्दिस्तान आज़रबायजान के दक्षिण	कर्मांशाह
३	लूरिस्तान गुर्दिस्तान के दक्षिण	खुर्रमाबाद
४	खुजिस्तान लूरिस्तान के दक्षिण समुद्र की खाड़ी तक	दिज़फ़ुल
५	फ़र्स खुजिस्तान के पूर्व	शीराज़
६	लारिस्तान फ़ार्स के दक्षिण समुद्र की खाड़ी तक	लार
७	कर्मा फ़र्स के पूर्व	कर्मा
८	खुरासान कर्मा के उत्तर	मशहिद
९	इराक़ फ़ार्स के उत्तर	इस्फहान } तिहरान }
१०	माज़न्दरां इराक़ के उत्तर	सारी
११	गीलां माज़न्दरान के वायु कोन	रशद
१२	अस्तराबाद गीलां के उत्तर	अस्तराबाद

हुर्मज़ और करक इत्यादि कई टापू जो ईरान की खाड़ी में हैं इसी बादशाहत में गिने जाते हैं। ईरान की खाड़ी से मोती बहुत उमदः निकलता है। रेगिस्तान और पहाड़ों की इस मुल्क में इफ़रात है, और उन के बीच बीच में सुन्दर रम्य और मनोहर दूनें हैं, कि जिनमें

फूल फल आबादी और हरियाली सब कुछ मौजूद हैं। पहाड़ दक्षिण तरफ़ के तो थोड़े बहुत सवृक्ष हैं, बाक़ी बिलकुल नंगे। वह बड़ा रेगिस्तान जो कर्मा से माज़न्दरां तक चला गया है ४०० मील से कम लम्बा नहीं है। नदी बहुत बड़ी कोई नहीं। झील ऊमिया की कास्पियनसी और पश्चिम सीमा के बीच ३०० मील के घेरे में निर्मल परन्तु खारे जल से भरी है, और उसके अन्दर से गंधक की गन्धि आती है। धरती जो पानी से सिंची है खूब उपजाऊ। पैदाइश वहां ग़ल्ले और मेवों की अफ़ग़ानिस्तान सी, पर मेवा ईरान का बिहतर सारे जहान से। केसर और सना भी अच्छी होती है। जानवर वहां वेही होते हैं जिनका बर्णन अभी अफ़ग़ानिस्तान में कर आये। घोड़ा ईरान का यद्यपि अरब सा खूबसूरत और तेज़ नहीं है, परन्तु मज़बूती और क़द में उससे बढ़कर होता है, मीयर साहिब लिखते हैं कि एक सवार तिहरान से दस दिन में बूशहर को जो सात सौ मील से अधिक है ख़त लेकर पहुंच गया था। जंगलों में गोरखर बहुतायत से हैं। खान से ईरान में चांदी सीसा लोहा तांबा संगमर्मर नफ्त गन्धक और फ़ीरोज़ा निकलता है। मोमयाई वहां एक पहाड़ की गुफ़ा में पानी की तरह टपकती है, बरसवें दिन जिले का हाकिम उस गुफ़ा को खोलता है, जो कुछ मोमयाई इकट्ठी हुई रहती है बादशाह के पास भेज देता है, इस में घाव बहुतही जल्द चंगा हो जाता है। उत्तर भाग में सर्दी और दक्षिण भाग में गर्मी रहती है, आस्मान सदा साफ़ और निर्मल, हवा में खुशकी मेंह केवल ग़ीलां और माज़न्दरां के सूबों में जो कास्पियनसी के कनारे हैं बरसता है, बाक़ी और जगहों में बहुत कम, जो हो आबहवा उस मुल्क की बहुत ही उमदा है। आदमी वहां के सुन्दर हँसमुख मि-

कि जब चार्डिन साहिब ने उस शहर को २४ मील के घेरे में बस्ता देखा था। उस वक्त उस में दश लाख आदमी ७४५ मस्जिद ४८ मदरसे १८०० कार्वांसरा और २७३ हम्माम थे। शीराज़ तिहरान से ५०० मील दक्षिण सुन्दर दरख्तों के झुण्ड में दूर से मस्जिदों के मीनार और गुंबज़ चमकते हुए चालीस हज़ार आदमियों की बस्ती है, मकान छोटे गली तंग लेकिन बाहर बाग़ बहुत सुन्दर खुशबूदार फूलों से भरे फ़व्वारे छूटते हुए, हाफ़िज़ और सादी इसी जगह गड़े हैं। शीराज़ से तीस मील वायुकोन को ईरान की अति प्राचीन पहली राजधानी इस्तख़र, जिसे अंगरेज़ पार्सिपोलिस कहते हैं, बसता था, सिकन्दर ने उसे ग़ारत किया, एक खण्डहर, जिसे वहां वाले जमशेद का तख्त कहते हैं, अब तक भी मौजूद है, उसके संगमर्मर की सफ़ाई जो आइने की तरह चमकते हैं, उसके खम्भों की उंचाई जो इस दम भी कुछ न्यूनाधिक साठ खड़े हैं, उसकी सूरत मूरत और नक्काशियों की बारीकी जो ज़ीनों के दर्मियान बहुत खूबी के साथ बनाई हैं, देखकर बड़ा अचरज आता है, उस खंडहर पर बहुतसे प्राचीन पारसी अक्षर तीर के फल की सूरत पर खुदे हैं, अब उनको इस काल में कोई भी न पढ़ सकता था, मेजर रालिंसन साहिब ने दस बरस की मिहनत में उस लिपि का मतलब निकाला, और उन अक्षरों की वर्णमाला भी बना ली, अब उसकी सहाय से उस देश में जहां जहां पुराने मकानों पर उस साथ के अक्षर लिखे थे सब पढ़े गये। इस पर्सिपोलिस के खंडहर पर बड़े बादशाह कैखुसरो जिसे प्राय चौबीस सौ बरस गुजरते हैं और दारा का नाम लिखा है, और लिखा है कि हिन्दुस्तान से मिसर और यूनान तक सारे देश इनके राज में थे। यह प्राचीन पारसी भाषा जो तीर के फल की सदृश

अक्षरों में लिखी है संस्कृत से विशेष करके वेद की वाणी से इतना मिलती है, और पोशाक हथियार सवारी और आकृति उन सूरतों की जो वहां पत्थरों पर खुदी हुई हैं हिन्दुस्तान के कई प्राचीन मंदिरों की नक़्क़ाशी से ऐसी बराबर होती हैं, कि उस समय हिन्दुस्तान और ईरान के चाल चलन मत जिन लोगों ने ईरान और हिन्दुस्तान के प्राचीन इतिहास अच्छी तरह देखे हैं उनके मन को दृढ़ निश्चय हो जाता है, कि व्यौहार इत्यादि में कुछ बड़ा बीच न था, हिन्दुओं का मूल मंत्र गायत्री सूर्य की वंदना है, ईरानी भी पहले मित्र अर्थात् सूर्य को मानते थे। हिन्दुस्तानियों के क़ौल बमूजिब अंगिराऋषि ने अग्नि प्रकट की, यज्ञ होम इत्यादि की बुनियाद बांधी, ईरानियों के कहने अनुसार ज़र्दश्तने अग्निहोत्रियों का मत चलाया। हिन्दुस्तान में जैनी अथवा बौधोंने हिंसा त्यागकी, ईरानके दर्मियान सेवल साल में एकबार बादशाह अपनी सेना लेकर सुष्टु अर्थात् तृणचर पशुओं की रक्षा के निमित्त दुष्ट अर्थात् मांसाहारी जीवों के नाश करने को चढ़ता था वही मानों शिकार की असल हुई, बाक़ी वे भी हिंसा को अत्यन्त बुरा समझते थे। समय पाकर देशों के चाल चलन मत व्यवहार इत्यादि से भेद आ गया॥

अरब

यह प्रायद्वीप एशिया के नैर्ऋतकोन में १२ अंश ३० कला से ३४ अंश ३० कला उत्तर अक्षांश तक और ३२ अंश ३० कला से ६० कला पूर्व देशांतर तक चला गया है। सीमा उसकी उत्तर रूम की सल्तनत, पूर्व ईरान की खाड़ी, पश्चिम रेडसी नाम खाड़ी जिसे बहर अहमर भी कहते हैं और स्वीज़ का डमरूमध्य, और

खानःबदोश अर्थात् पर्यटक हैं, और तातारियों की तरह डेरों में रहा करते हैं, और मवेशी पालकर और सौदागरों के क़ाफ़िले लूटकर अपना गुज़ारा करते हैं। टोपियां वहां के आदमी रूई अथवा ऊन की एक पर दूसरी पंदरह पंदरह तक रंग बरंग की पहनते हैं, ऊपर वाली सब में बढ़िया रहती है, ग़रीब से ग़रीब भी दो ज़रूर पहनेगा, और फिर उन पर दुपट्टा बांधते हैं। इस मुल्क के आदमी ऊंट का गोश्त और ऊंटनी का दूध बहुत खाते पीते हैं। मुहम्मद से पहले अरबवाले भी हिन्दुस्तानियों की तरह मूर्तों की पूजा करते थे और नर बलि देते थे, मुहम्मद ने मूर्तों को तोड़कर उन्हें निराकार निरंजन अरूपी सर्वशक्तिमान जगदीश्वर को पूजने का उपदेश किया। इसी मुहम्मद की गद्दी पर जो बादशाह बैठे वह ख़लीफ़ा कहलाए। अरबी ज़ुबान संस्कृत की तरह कठिन है, और उस भाषा में भी बहुत सी पुस्तकें विद्या की मौजूद हैं। क़हवा सना गोंद धूप मुसब्बर संबुल इत्यादि वहां से बाहर जाता है, और लोहा फ़ौलाद सीसा रांगा तलवार छुरी शीशे चीनी के बरतन इत्यादि बाहर से वहां आते हैं। मक्का २१ अंश २८ कला उत्तर अक्षांस और ४० अंश १५ कला पूर्व देशान्तर में एक छोटी सी रेतल और पथरीलीदून में बसा है, न उस शहर में कोई बाग़ है न किसी तरफ़ दरख़्त और सबज़ा नज़र पड़ता है, बरन पानी भी पीने लाइक़ दस कोस से लाना पड़ता है, शहर क़रीने से बसा है, और बाज़ार भी चौड़ा और पुर रौनक है, बस्ती उसमें प्राय ३०००० आदमियों की होवेगी। क़ाबा अर्थात् मुसल्मानों का मन्दिर मक्के के दर्मियान चौखूंटी चारदिवारी के अंदर जिसके कोनों पर मीनार बने हैं एक छोटा सा चौखूंटा मकान है, छत्तीस फ़ुट ऊंचा और तेंतीस फ़ुट चौड़ा काले कपड़े से ढका हुआ,

उसके अन्दर एक कोने में हजरुल् असवद् (१) अर्थात् काला पत्थर चांदी से मढ़ा हुआ रखा है, जो यात्री आते हैं पहले इस पत्थर को चूमते हैं क़ाबा साल भर में तीन दिन खुलता है, एक दिन मर्दों के लिये, दूसरे दिन स्त्रियों के लिये तीसरे दिन धोने और साफ़ करने के लिये। पास ही ज़म्ज़म् कूआ है, मुसल्मान उसका सोता स्वर्ग से आया बतलाते हैं, और उसके जल पीने में बड़ा महात्मय समझते हैं। मक्का और मदीना मुसल्मानों का बड़ा तीर्थ है, उनके पैग़म्बर मुहम्मद सन् १५६९ में मक्के के दर्मियान पैदा हुये थे, मदीना मक्के से २०० मील उत्तर वायुकोन को झुकता पुरानी सी शहरपनाह के अन्दर छ सौ घर की बस्ती है, मसजिद मुहम्मद की बहुत बड़ी बनी है, चार सौ खम्भे संगमूसा के लगे हैं, और तीन सौ चराग़ हमेशः बलते रहते हैं, बीच में मुहम्मद की क़बर है, उसके दोनों तरफ़ अबूबक्र और उमर गड़े हैं। अदन का क़िला जो रेडसी के मुहाने पर यमन के इलाक़े में है कुछ दिनों से सरकार अंगरेज़ी के क़ब्ज़े में आ गया है॥

एशियाईरूम

इसको एशियाई इस वास्ते कहते हैं कि रूम की सल्तनत एशिया और फ़रंगिस्तान दोनों खंडों में पड़ी है, यहां केवल उसी भाग का बर्णन होता है जो एशिया में है, बिस्तार पूर्वक इस बादशाहत का बयान फ़रंगिस्तान के साथ होवेगा, क्योंकि उसकी दारुस्सलतनत

---

(१) यह पत्थर उसी क़िस्म का है जिसे अंगरेज़ी में वाल्क़ेनिक बासाल्ट (Volanic Basalt.) कहते हैं॥

कुस्तुंतुनीया उसी खंड में बसी है। फ़रंगिस्तान वाले इस मुल्क को एशियाटिक टर्की अर्थात् एशियाई तुर्किस्तान पुकारते हैं, परन्तु इसमें शाम की सारी विलायत और अरब और ईरान के भी हिस्से हैं। गये तीन हज़ार बरस के अर्से में जैसा उलट फेर बादशाहतों का ज़मीन के इस टुकड़े पर रहा है, कदापि दूसरी जगह सुनने में नहीं आया, कभी यूनानियों ने लिया, कभी रूमियों ने दबाया, कभी ईरानियों के अमल में आया, कभी अरबों के दख़ल में गया, कभी तातारियोंने उसे लूटा, कभी फ़रंगियोंने उस पर चढ़ाव किया, और तमाशा यह कि जब जिसने इस मुल्क को फ़तह किया नयेनये नामों से नये नये सूबे और नये नये ज़िलों में बांटा। ईसाइयों की प्राचीन पुस्तकों में लिखा है कि ५८५८ बरस गुज़रते हैं ईश्वर ने पहला मनुष्य इसी मुल्क में पैदा किया, और तूफ़ान के बाद नूह का जहाज़ इसी मुल्क में लगा, इसी मुल्क से मनुष्य सारी दुनियां में फैले, और इसी मुल्क में पहले प्रतापी राजा हुये। धरती खोदने से अद्यावधि मूर्ति इत्यादि ऐसी ऐसी वस्तु अति प्राक्तन निकलती हैं कि जिन से उस देश का किसी समय में महापराक्रमी राजाओं से शासित होना बख़ूबी साबित है। ईसा मसीह इसी देश में पैदा हुये थे, और इसी कारण वहां उस मतावलंबियों के बड़े बड़े तीर्थ स्थान हैं। निदान यह एशियाई रूम ३० से ४२ अंश उत्तर अक्षांश और २६ से ४८ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। सीमा उसकी पूर्व ईरान, दक्षिण अरब, पश्चिम मेडिटरेनियन, और उत्तर डार्डनल्स मार्मोरा बासफ़ोरस और ब्लैकसी नामक समुद्र की खाड़ियां। पूर्व से पश्चिम को हज़ार मील लंबा और उत्तर से दक्षिण को नौ सौ मील चौड़ा चार लाख नब्बे हज़ार मील मुरब्बा के बिस्तार में है। आदमी उस में अनुमान

एक करोड़ बीस लाख होवेंगे, और इस हिसाब से आबादी उसकी पचीस आदमियों की भी फ़ी मील मुरब्बा नहीं पड़ती। शाम का मुल्क फ़ुरात नदी और मेडिटरेनियन के बीच में पड़ा है, उसी के दक्षिण भाग में फ़िलिस्तीन है, जहां से ईसाई मत की बुनियाद बँधी, और जिसे ईसाई लोग पवित्र भूमि कहते हैं। फ़ुरातके पूर्व दियारबक्र है उसका दक्षिण भाग अरबी इराक़ और पूर्व भाग गर्दिस्तान अथवा कुर्दिस्तान कहलाता है, और उसके उत्तर तरफ़ इर्म का इलाक़ा है, जिसे अंगरेज़ आर्मिनिया कहते हैं। एशियाई रूम में पहाड़ बहुत हैं और मैदान कम। शाम के अग्निकोन में बड़ा भारी उजाड़ रेगिस्तान है। पहाड़ों में टारस और अरारात मशहूर हैं, टारस की श्रेणी मेडिटरेनियन के तट से निकट ही निकट खल दुनिया अंतरीप से फ़ुरात नदी तक चली गई है, और अरारात जिसे जूदीका पहाड़ भी कहते हैं इर्म में रूस और ईरान की सहद्द पर १७००० फ़ुट समुद्र से ऊंचा है, ईसाइयों के मत बमूजिब तूफ़ान के बाद नूह का जहाज़ इसी अरारात पर आकर लगा था। नदियों में दजला और फ़ुरात जो बसरे से कुछ दूर ऊपर मिलकर शातुलअरब के नाम से ईरान की खाड़ी में गिरती हैं नामी हैं। फ़ुरात १५०० मील लंबी है और दजला ८०० मील। बालबक से अनुमान ४० मील पश्चिम मेडिटरेनियन के तट से निकट जबैल के नीचे इबरिम नदी बहती है, उसका पुराना नाम अडोनिस है, और उसका पानी गेरू इत्यादि के मिलने से जो अवश्य उसके कनारे पर कहीं होगा साल में एक बार लाल हो जाता है, वहां के नादान आदमी खयाल करते हैं कि किसी ज़माने में अडोनिस नाम एक आदमी को शिकार खेलते हुए सूवर ने मार डाला था उसी का लहू हर साल उस नदी में आता है। झील डेडकी

की जिसे बहरेलूत भी कहते हैं फ़िलिस्तीन के दक्षिण भाग में प्राय ५० मील लंबी होवेगी, पानी उसका निरा खारा, और आस पास के पहाड़ बिलकुल उजाड़ दरख़्त उन में देखने को भी नहीं, क्या ईश्वर की महिमा है कि इस झील के नज़दीक न तो कोई दरख़्त जमता है, और न उसमें कोई जीव जन्तु जीता है। आबहवा अच्छी और मोतदल पर सब जगह एकसी नहीं है, ऊंचे पहाड़ों पर यहां तक सर्दी पड़ती है कि वे सदा बर्फ़ से ढके रहते हैं, और रेगिस्तानों के दर्मियान समूम चला करती है। आदमी वहां के काहिल और ग़लीज़ हैं, इस कारण वबा अर्थात् मरी अकसर फैल जाती है। भूंचाल उस मुल्क में बहुत आता है। धरती अकसर जगह उपजाऊ है, पर वहां वाले खेती में मिहनत नहीं करते, जौ गेहूं मक्की रूई तमाकू क़हवा अफ़यून मस्तकी जिसे लोग रूमीमस्तगी कहते हैं ज़ैतून अंगूर सालिब मिसरी इत्यादि बहुत प्रकार के अनाज मेवे और दवाइयां पैदा होतीहैं। बकरियों से वहां एक क़िस्म का पशमीना हासिल होता है, और रेशम भी वहां की पैदाइशों में गिना जाता है। गधे घोड़े खच्चर ऊंट लकड़बघे रीछ भेड़िये गीदड़ इत्यादि घरेलू और जंगली जानवर इफ़रात से हैं, पर टिड्डियों का दल वहां अरब के रेगिस्ताने से ऐसा बादलसा उमड़ता है कि बहुधा खेती बारियां बिलकुल नाश हो जाती हैं, यदि अग्निकोन की हवा जो वहां अधिक बहती है उन्हें समुद्र में ले जाकर न डुबाया करे तो वे शायद सारे पृथ्वी के तृण वीरुध को भक्षण कर जावें। खान तांवे की उस मुल्कमें एक बहुत बड़ी है। रोड्स और सिपरस के टापू मेडिटरेनियनसीमें इसी बादशाहत के ताबे हैं। यह वही रोड्स है जहां के बंदर पर किसी ज़माने में एक मूर्ति पीतल की सत्तर हाथ ऊंची खड़ी थी और उसकी टांगों तले से जहाज़ पाल उड़ाए निकल जाते थे,

सिपरस को कुपरस भी कहते हैं। आदमी इस मुल्क के तुर्कमान यूनानी अर्मनी गुर्द और अरब मुसल्मान और अकसर ईसाई भी हैं, जुबानें तुर्की यूनानी शामी अर्मनी अरबी ईरानी सब बोली जाती हैं। चीज़ों में वहां रेशमी कपड़े क़ालीन और चमड़े बहुत अच्छे तयार होते हैं, और दिसावरों को जाते हैं। बग़दाद हलब दमिश्क़ अर्ज़ रूम समिर्ना बसरा मूसिल और बैतुलमुक़द्दस इस मुल्क में नामी शहर हैं। बग़दाद ३३ अंश २० कला उत्तर अक्षांश और ४४ अंश २४ कला पूर्व देशांतर में दजला नदी के दोनों कनारों पर शहरपनाह के अन्दर बड़ा मशहूर शहर है, सन् ७६२ में मुहम्मद के चचा अब्बास के पड़पोते खलीफ़ा मंसूर ने उसे अपनी दारुस्सलतनत ठहराया था, और फिर उसके जानशीनों के समय में जिनके नाम का खुत्बा (१) गंगा से लेकर नील (२) नदी बरन अटलांटिक समुद्र पर्य्यंत पढ़ा जाता था उसने ऐसी रौनक़ पाई कि जिसका बर्णन अलफ़लैला की महाअद्भुत कहानियों में किया है। अब उसमें अस्सी हज़ार आदमियों से अधिक नहीं बस्ते। सन् १२५७ में जब चंगेज़खां के पोते हलाकू ने वहां के खलीफ़ा मुस्तासिमबिल्लाह को मारकर शहर लूटा आठ लाख आदमी उसके अन्दर मारे गये थे। सन् १४०१ में उसे अमीर तैमूर ने लूटा और जलाया, और सन् १६३७ में रूमके बादशाह चौथे मुराद ने, जिसे अंगरेज़ अमूरात कहते हैं, तीन लाख फ़ौज से चढ़ाव करके उसे अपने क़बजे में कर लिया। हलब बग़दाद से ४७५ मील पश्चिम वायुकोण को झुकता शहरपनाह के अन्दर आठ

---

(१) खुतबा मस्जिद में बादशाह के नाम से पढ़ा जाता है।

(२) अफ़रीक़ा में मिसर के नीचे बहती है॥

मील के घेरे में अढ़ाई लाख आदमियों की बस्ती बड़ी तिजारत की जगह है, उसकी मसाजिदों के सफ़ेद सफ़ेद मीनार और गुम्बज बड़े बड़े लंबे सर्व के दरख्तों में बहुत भले और सुहावने मालूम होते हैं, बाज़ार ऊपर से बिलकुल पटे हुए हैं, इसलिये धूप और मेंह का बड़ा बचाव है, रौशनी के लिये दुतरफ़ा खिड़कियां खोल दी हैं, किसी समय में वह शाम की दारुस्सलतनत था। दमिश्क़ बग़दाद से ४७५ मील पश्चिम पहाड़ों से घिरा हुआ एक बड़े मैदान में सुन्दर बाग़ों के दर्मियान पारफ़ार नदी के दोनों कनारों पर दो लाख आदमियों की बस्ती है। वहां से पचास मील उत्तर वायुकोनको झुकता बालबक में बाल देवता अर्थात् सूर्य का एक मन्दिर अति अद्भुत प्राचीन खंडहर पड़ा है, उसके संगमर्मर के खंभों की बलंदी देखकर अक़ल भी हैरान रह जाती है, एक पत्थर उसके खंभे का जो अब तक नीचे पड़ा है ७० फ़ुट लम्बा १४ फ़ुट चौड़ा और चौदही फ़ुट मोटा नापा गया था, बिना कल मालूम नहीं किस बूते और बल से इन पत्थरों को उठाते थे। अर्ज़ रूम बग़दाद से ५२५ मील वायुकोन उत्तर को झुकता इर्म के इलाक़े में, और समिर्ना पश्चिम सीमा पर समुद्र के कनारे है, इन दोनों शहरों में भी लाख लाख आदमी से कम नहीं बसते। बसरा जहां गुलाब का इतर बहुत उमदा बनता है बग़दाद से २८० मील अग्निकोन सात मील के घेरे में शातुलअरब के दहने कनारे शहरपनाह के अन्दर बसा है, और बड़े व्यौपार की जगह है, आदमी उस में अनुमान साठ हज़ार होंगे। मसिल् बग़दाद से २६० मील वायुकोन दजला के दहने कनारे पैंतीस हज़ार आदमियों की बस्ती है। उसी के साम्हने जहां अब नूनिया गांव बस्ता है नैनवा के पुराने शहर का निशान मिलता है, जिसका घेरा किसी समय साठ

मील का बतलाते हैं। बैतुलमुकद्दस, जिसे अंगरेज़ जरूज़लम् अथवा उर्शलीम कहते हैं, फ़िलिस्तीन अर्थात् किनआं के इलाक़े में डेडसी झील और मेडिटरेयिन की खाड़ी के बीच में पहाड़ों से घिरा हुआ एक ऊंचे से मैदान में तीस हज़ार आदमियों की बस्ती है, वह सुलैमान के बाप दाऊद का पाय तख़्त था, और उसी जगह सुलैमान ने सर्व शक्तिमान जगदीश्वर का मंदिर रचा था, उसी जगह ईसा मसीह सलीब पर खींचे गये, और उसी जगह ईसा मसीह की क़बर है। वहां से छ मील दक्षिण बैतुल्लहम् ईसा मसीह का जन्म स्थान है। पालमीरा अथवा तद्मोर, जो सुलैमान ने बग़दाद से ३५० मील पश्चिम वायुकोन को झुकता शाम के रेगिस्तान में जहां पानी भी कठिन से मिलता है और पेड़ों का तो क्या ज़िकर है दो हज़ार आठ सौ अठावन बरस गुज़रे बसाया था, अब वहां उस नामी शहर के बदल कोसों तक टूटे फूटे मकानों के पत्थर पड़े हैं, और सुन्दर सचिक्कण संगमर्मर के खंभों के ताड़ के दरख़्तों की तरह मानों जंगल के जंगल खड़े हैं, इन खंडहरों में सुलैमान का बनाया सूर्य का एक मंदिर अब भी देखने योग्य है। हिल्ला में बग़दाद से ५० मील दक्षिण फुरात के दोनों कनारे बाबिल के पुराने शहर का निशान देते हैं, और मुसल्मान और फ़रंगी दोनों कहते हैं कि दुनियां में सब से पहले वही बसा था, और सब से पहले वही निमरूद बादशाह की राजधानी हुआ, जैसे हिन्दू अयोध्या को बतलाते हैं। जिन दिनों यह शहर अपनी औज पर था ६० मील के घेरे में बस्ता था, ८७ फुट मोटी और ३५० फुट ऊंची उसकी शहरपनाह थी, गिर्द खंदक़, दरवाज़े पीतल के लगे हुए, महल बादशाही साढ़े सात मील के घेरे में तीन दीवारों के अन्दर अच्छे ख़ासे बने हुए, बाग़ महल के गिरद

पुश्ता पाटकर इतना ऊंचा बना हुआ कि उस में से सारे शहर की सैर होती रहे। इस शहर को ईरान के बादशाह कैखुसरो ने ग़ारत किया था। कर्बा बग़दाद से पचास मील नैर्ऋतकोण को फ़ुरात पार है, वहां मुसलमानों के पैग़म्बर मुहम्मद के नवासे अर्थात् दौहित्र हसन और हुसैन मारे गए थे। डार्डेन नल्स के तटस्थ ३०४७ बरस गुज़रे ट्राय का वह प्रसिद्ध क़िला था जिसे यूनानियोंने बारह बरस की लड़ाई में तोड़ा था, इस घोर युद्ध का बर्णन होमर नाम एक यूनानी कवि ने बड़ी कबिताई के साथ किया है। वहां से १५० मील पूर्व बरसा में एक तप्तकुण्ड है नहाने के लिये उस में सुन्दर हम्माम बने हैं॥

इति

अनुक्रमणिका

तीसरा हिस्सा

ख

ग

नकशा एशिया की विलायतों के बिस्तार आबादी और आमदनी का बर्णमाला के क्रम से

संख्या	नाम विलायत का	बिस्तार मील मुरब्बा	लंबान मील	चौड़ान मील	आबादी फ़ी मील मुरब्बा	कुल आबादी	आमदनी साल में	राजधानी
१	अफ़ग़ानिस्तान	४६४०००	१०००	८००	२८	१४००००००	५७०००००	काबुल
२	अरब	१००००००	१७००	१२००	१२	१२००००००	....	मक्का
३	ईरान	५६००००	६००	६००	१८	१००००००००	३००००००	तिहरान
४	एशियाई रूम	४६००००	१०००	६००	२५	१२००००००	....	....
५	एशियाई रूस	३००००००	५०००	१५००	....	३००००००	....	....
६	कोचीन	१५००००	....	....	६३	१३६५००००	....	ह्यू
७	चीन	५००००००	४७००	२०००	६०	३००००००००	६००००००००	पेकिन
८	जपान	६००००	....	....	....	....	२८०००००००	जेडो
९	तूरान	१००००००	१५००	१०००	५	५००००००	४८०००००	बुख़ारा
१०	बर्म्हा	१६४०००	१०००	६००	७४	१४००००००	....	आवा
११	मलाका	....	८००	१२०	....	....	....	मलाका
१२	स्याम	१५५०००	३५०	३६०	१६	२६४५०००	....	बंकाक
१३	हिन्दुस्तान....	१२०००००	१८००	१६००	११६	१४०००००००	३००००००००	कलकत्ता